

लोकतंत्र प्रहरी

● वर्ष-01 ● अंक- 63 ● भिलाई, शनिवार 06 सितम्बर 2025 ● हिन्दी दैनिक ● पृष्ठ संख्या-8 ● मूल्य - 2 रुपया ● संपादक- संजय तिवारी, मो. 9200000214

पहला कॉलम

भूपिंदर सिंह जंडपुरी
सूचना एवं लोक संपर्क
विभाग की दर्जा 4
यूनियन के प्रधान बने

चंडीगढ़। पंजाब सिविल सचिवालय-1 में सूचना एवं लोक संपर्क विभाग की दर्जा-4 यूनियन के भूपिंदर सिंह जंडपुरी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया है। भूपिंदर सिंह जंडपुरी 29 वर्षों से विभाग में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वर्तमान समय में वे दफ्तरी के पद पर तैनात हैं। इस अवसर पर गुरमुख सिंह, दफ्तरी को भी सर्वसम्मति से मीत प्रधान बनाया गया। जंडपुरी ने कहा कि वे यूनियन सदस्यों के साथ मिलकर संगठन की मजबूती के लिए काम करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि दर्जा-4 कर्मचारियों की जायज माँगों को संबंधित अधिकारियों तक पहुँचाने के लिए भी वे प्रयास करेंगे। उन्होंने अपनी इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाने का संकल्प लिया है। इस अवसर पर पूर्व प्रधान परमजीत सिंह, सुनमुख सिंह, टिंकू, चमकौर सिंह, रवि कुमार, खुशवंत सिंह, जसवंत सिंह जस्सी, चरणो देवी, अमनदीप कुमार, चरणजीत सिंह और नरेश कुमार ने भूपिंदर सिंह को बधाई देते हुए उनका हर तरह से साथ देने का भरोसा दिया।

आप विधायक रमन
अरोड़ा फिर गिरफ्तार,
कल ही मिली थी
जमानत

जालंधर। सेंट्रल हलके के आप विधायक रमन अरोड़ा की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रहीं। कल ही उन्हें पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट से जमानत मिली थी और आज फिर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। रमन अरोड़ा के जेल से बाहर आने की उम्मीदें फिलहाल कम नजर आ रही हैं क्योंकि आज उन्हें तीन दिन के रिमांड पर लिया गया। रमन अरोड़ा के पक्ष का कहना है कि जिस एफआईआर के आधार पर अब उन्हें गिरफ्तार किया गया वह किसी ठेकेदार की शिकायत पर हुई है और एफआईआर 23 अगस्त को हुई थी लेकिन गिरफ्तारी अब हुई है। विधायक रमन अरोड़ा के वकील नवीन चड्ढा ने कहा कि ठेकेदार रमेश ने आरोप लगाया है कि वह विधायक अरोड़ा को 30 हजार रुपए देता रहा। यदि अरोड़ा ने पैसे लिए है तो उसी समय शिकायतकर्ता रमेश पुलिस को शिकायत देता। ये ठेकेदार पार्किंग ठेकेदारी का काम करता है।

भाजपा ने अनुसूचित
जाति के उत्थान के
लिए किये अनेक
काम-बड़ौली

चंडीगढ़। हरियाणा भाजपा के अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने कहा है कि भाजपा ने अनुसूचित जाति समाज के उत्थान के लिए लगातार कार्य किये हैं, जबकि कांग्रेस ने हमेशा इस समाज को केवल वोट बैंक समझा। बड़ौली ने बुधवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस शासन में दलितों के हितों को दरकिनार किया गया, जबकि भाजपा सरकार सबको साथ लेकर चलने वाली सरकार है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नाथन सिंह सैनी का लक्ष्य अंत्योदय है। बड़ौली को पंचकूला स्थित प्रदेश कार्यालय ‘पंचकमल’ में आयोजित भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

राजभवन में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह

शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होता है: राज्यपाल रमेन डेका....

■ शिक्षा के बिना जीवन

अधूरा: मुख्यमंत्री साय

■ राजभवन में राज्य स्तरीय

शिक्षक सम्मान समारोह

आयोजित

रायपुर/ संवाददाता

राज्यपाल श्री रमेन डेका और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज शिक्षक दिवस के अवसर पर राजभवन के छत्तीसगढ़ मण्डप में आयोजित गरिमामय समारोह में वर्ष 2024 के उत्कृष्ट शिक्षकों को राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया। समारोह में राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने वर्ष 2024 के लिए सभी सम्मानित शिक्षकों को बधाई और शुभकामनाएं दी। प्रदेश के 64 शिक्षकों को राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने राज्य शिक्षक सम्मान वर्ष 2025 के लिए चयनित 64 शिक्षकों के नामों की भी घोषणा की। राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री रमेन



डेका ने सर्वप्रथम भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति, महान दार्शनिक और प्रख्यात शिक्षाविद् डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को उनकी जयंती पर नमन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि शिक्षा मानव के सर्वांगीण और मुख्यमंत्री ने वर्ष 2024 के लिए सभी सम्मानित शिक्षकों को बधाई और शुभकामनाएं दी। प्रदेश के 64 शिक्षकों को राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस मौके पर स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने राज्य शिक्षक सम्मान वर्ष 2025 के लिए चयनित 64 शिक्षकों के नामों की भी घोषणा की। राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री रमेन

जाए यह विद्यार्थियों को सीखाना चाहिए। श्री डेका ने कहा कि शिक्षक ऐसा पढ़ाएँ जिससे बच्चे स्कूलों की ओर आकर्षित हो। स्कूल भवन नहीं बल्कि उसके अंदर क्या पढ़ा रहे है ये महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्राचीन भारत की गुरुकुल परंपरा को श्रेष्ठ बताया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक गेम चेंजर है। इस नीति के अनुरूप बच्चों को शिक्षा मिले यह शिक्षकों की जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई है, जिसका मूल उद्देश्य यही है कि शिक्षा अधिक व्यवहारिक, कोशल आधारित और सर्वांगीण बनाया जाए। इस नीति में विशेष बल मातृभाषा में शिक्षा पर दिया गया है।

शिक्षक ही सच्चे राष्ट्र निर्माता होते हैं-मुख्यमंत्री

समारोह की अध्यक्षता कर रहे मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि शिक्षक ही सच्चे राष्ट्र निर्माता होते हैं। वे देश को ऐसे राष्ट्रभक्त नागरिक देते हैं, जो आगे चलकर समाज और राष्ट्र की उन्नति में योगदान देते हैं। जिस प्रकार दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है, उसी प्रकार शिक्षक भी अनेक कठिनाइयों के बावजूद ज्ञान का उजाला फैलाते हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर रहा है और इस रजत जयंती वर्ष में प्रदेश ने हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। शिक्षा विकास का मूलमंत्र है और इसके बिना जीवन अधूरा है। पिछले वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यापक विस्तार हुआ है। आज प्रदेश में 20 से अधिक विश्वविद्यालय, 15 से ज्यादा मेडिकल कॉलेज और राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम, एम्स तथा लॉ विश्वविद्यालय स्थापित हैं।

टैरिफवॉर के बीच नरम पड़े ट्रंप

लगता है हमने भारत रूस को चीन के हाथों खो दिया

वॉशिंगटन। अमेरिका की तरफ

भारत पर लगाए गए टैरिफ के बाद दोनों देशों के बीच तनाव देखने को मिल रहा है। इस दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लगातार भारत पर निशाना साधते नजर आ रहे थे। लेकिन चीन में हाल ही में संघर्ष हुए एससीओ सम्मेलन के बाद अब ट्रंप के तेवर नरम पड़ते दिख रहे हैं। ट्रंप ने सोशल मीडिया द्रुथ सोशल पर लिखा कि, लगता है हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को सोशल मीडिया द्रुथ पर पोस्ट में एक तस्वीर भी शेयर की है। इस तस्वीर में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग नजर आ रहे हैं। इस पोस्ट में डोनाल्ड ट्रंप ने लिखा कि, लगता है कि हमने भारत और रूस को गहरे, अंधकारमय चीन के हाथों खो दिया है। ईश्वर करे कि उनका भविष्य लंबा और समृद्ध हो। ट्रंप की यह टिप्पणी पर उस समय आई है जब पिछले दिनों चीन के तिआनजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की नजदीकियों ने



पूर्व अधिकारियों ने ट्रंप को दी भारत से संबंध सुधारने की नसीहत

वहीं इससे पहले तमाम पूर्व अमेरिकी अधिकारियों ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को भारत के साथ संबंध सुधारने की नसीहत दी थी। इस कड़ी में पूर्व अमेरिकी एनएसए जॉन बोल्टन ने कहा कि ‘ट्रंप प्रशासन ने अमेरिका-भारत संबंधों को दशकों पीछे धकेल दिया है, जिससे पीएम मोदी रूस और चीन के करीब चले गए हैं। बीजिंग ने खुद को अमेरिका और डोनाल्ड ट्रंप के विकल्प के रूप में पेश किया है।

विश्व का ध्यान खींचा था। भारत-अमेरिका संबंधों में खटास तब और गहरी हो गई जब ट्रंप प्रशासन ने भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ दोगुना कर 50 प्रतिशत कर दिया।

किश्तवाड़ में भूस्खलन के

कारण 5 घायल, बडगाम में कई इलाके जलमग्न

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में भूस्खलन में 5 लोग घायल हुए हैं। द्रबशला स्थित मेघा परियोजना क्षेत्र में भूस्खलन की यह घटना हुई। हालांकि, तुरंत कार्रवाई करते हुए मौके से 5 लोगों को बचाया गया है। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी दी कि उन्होंने भूस्खलन के बाद किश्तवाड़ के डीसी पंकज कुमार शर्मा से बात की है। जिला प्रशासन की तारीफ करते हुए केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा, जिला प्रशासन की तत्परता और तेज कार्रवाई की प्रशंसा करनी होगी।



नई दिल्ली के झंगोला में राजमार्ग पर एक गड्ढे के पास सड़क पर एक क्षतिग्रस्त ऑटो रिक्शा खड़ा है।

केजरीवाल ने दिल्ली के शास्त्री पार्क में बाढ़ राहत शिविर का दौरा किया

बाढ़ पीड़ितों से मिलकर केजरीवाल का छलका दर्द बोले-खाने-पानी तक की दिक्कत,सरकार कहाँ है?

नयी दिल्ली/ एजेंसी

आम आदमी पार्टी (आप) के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को राष्ट्रीय राजधानी में बाढ़ प्रभावित लोगों के लिये दिल्ली सरकार से पर्याप्त राहत सामग्री उपलब्ध कराने की अपील की। उन्होंने आरोप लगाया कि बाढ़ प्रभावित लोगों को खाद्य पदार्थों की आपूर्ति और उनके लिए तंबू (टेंट) की व्यवस्था करने में देरी हुई है। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने उत्तर-पूर्वी दिल्ली के शास्त्री पार्क इलाके में बने

एक राहत शिविर का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि यदि केंद्र सरकार अफ़ग़ानिस्तान में भूकंप पीड़ितों को राहत सामग्री भेज सकती है, तो दिल्ली के बाढ़ प्रभावित लोगों को भी समय पर मदद मिलनी चाहिए। केजरीवाल ने संवाददाताओं से कहा, “मैं देख रहा हूँ कि लोगों को दिक्कत हो रही है। उन्हें समय पर खाना नहीं मिल रहा। चारों तरफ मच्छर हैं। बारिश हो रही है, लेकिन तंबू कल लगाए गए। यह प्राकृतिक आपदा है। हम सरकार से आग्रह करते हैं कि लोगों को सुविधाएं



उपलब्ध कराएं। पर्याप्त इंतजाम करना सरकार की जिम्मेदारी है।” केजरीवाल ने यह भी कहा कि पूरे दिल्ली में जलभराव की समस्या है।

उन्होंने कहा, “नालों की सफ़ाई समय पर नहीं हुई। कई इलाकों में सीवर का पानी ऊपर आ रहा है और कई जगह पीने का पानी नहीं है। मैं सरकार से अपील करता हूँ कि लोगों को सुविधाएं उपलब्ध कराएं।” केजरीवाल ने केंद्र की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार से उत्तर भारत के बाढ़ प्रभावित राज्यों को भी मदद देने का अनुरोध किया। उन्होंने बृहस्पतिवार को आप शासित केजरीवाल ने यह भी कहा कि पूरे दिल्ली में जलभराव की समस्या है।

फोन पर महिला आईपीएस को धमकाया

आपकी इतनी हिम्मत कार्रवाई बंद करो..उपमुख्यमंत्री अजित

नई दिल्ली/ एजेंसी

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता अजित पवार शुक्रवार को उस समय विवादों में फिर गए जब उनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया जिसमें वे कथित तौर पर एक महिला आईपीएस अधिकारी को सोलापुर के एक गांव में अवैध मिट्टी खुदाई के खिलाफ कार्रवाई रोकने के लिए मजबूर कर रहे हैं। यह घटना दो दिन पहले करमाला तालुका के कुर्दु

गाँव में हुई थी, जहाँ उप-विभागीय पुलिस अधिकारी अंजना कृष्णा अवैध ‘मुम’ उत्खनन की शिकायतों पर कार्रवाई करने गई थीं – सड़क निर्माण में व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाली सामग्री। अधिकारी के दौरे के दौरान ग्रामीणों के साथ झड़प हो गई, जिसके बाद स्थानीय राकांपा कार्यकर्ताओं ने हस्तक्षेप किया। वीडियो में पार्टी कार्यकर्ता बाबा जगताप को सीधे अजित पवार को फोन करने के बाद कृष्णा को अपना फोन देते हुए देखा गया।

जीएसटी सुधारों से बढ़ेगी खपत,बढ़ेगी आय!

देश के मध्यम वर्ग का हित सर्वोपरि-वृत्तिमंत्री निर्मला सीतारमण

नई दिल्ली/ एजेंसी

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को घोषणा की कि सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि जीएसटी कर सुधारों का लाभ देश के सभी आम लोगों तक पहुँचे। इंडिया टुडे टीवी और आज तक के साथ एक साक्षात्कार में, मंत्री ने उल्लेख किया कि 22 सितंबर के बाद सरकार के पास बहुत काम है और विश्वास व्यक्त किया

कि जीएसटी सुधारों का लाभ आम लोगों तक पहुँचेगा। निर्मला सीतारमण ने कहा कि हमारा मुख्य ध्यान यह सुनिश्चित करने पर होगा कि दरों में कटौती का लाभ जनता तक पहुँचे। 22 सितंबर के बाद हमारे पास बहुत काम है। यह एक बड़ी सतर्कता प्रक्रिया है और हमें विश्वास है कि इसका लाभ आम आदमी तक पहुँचेगा। सीतारमण ने जोर देकर कहा कि नए जीएसटी सुधार देश के मध्यम वर्ग और आम आदमी की बुनियादी जरूरतों और

आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि 90 प्रतिशत वस्तुएँ पाँच प्रतिशत या उससे कम कर स्लेब में आती हैं, जबकि केवल एक प्रतिशत वस्तुएँ ही 40 प्रतिशत कर दर को छूती हैं। सीतारमण ने कहा कि आम आदमी और मध्यम वर्ग, उनकी बुनियादी जरूरतें और आकांक्षाएँ जीएसटी सुधारों का मुख्य केंद्र हैं। 99 प्रतिशत वस्तुएँ अब 5 प्रतिशत या उससे कम कर श्रेणी में हैं। केवल एक प्रतिशत ही 40 प्रतिशत



कर श्रेणी में आई हैं। केंद्रीय वित्त मंत्री ने बताया कि सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों और बीमा कंपनियों सहित उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने सरकार

को जीएसटी सुधारों को लागू करने में पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा, अगर कोई कंपनी इसके विपरीत कहती है, तो हम उनसे बात करेंगे। खपत बढ़ेगी और आय भी बढ़ेगी। कांग्रेस और विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए, सीतारमण ने कहा कि वे जीएसटी 2.0 सुधारों का श्रेय लेने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे उन्होंने कभी गम्बर सिंह टैक्स कहा था। सीतारमण ने कहा, जो लोग कभी वस्तु एवं सेवा कर

(जीएसटी) को ‘गम्बर सिंह टैक्स’ कहकर उसका मज़ाक उड़ाते थे, वे अब सरकार के जीएसटी 2.0 सुधारों का श्रेय लेने की कोशिश कर रहे हैं। जीएसटी परिषद की 56वीं बैठक में 12 प्रतिशत और 28 प्रतिशत की दरों को मिलाकर जीएसटी दरों को 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत के दो स्लैब में तर्कसंगत बनाने का निर्णय लिया गया। 5 प्रतिशत स्लैब में आवश्यक वस्तुएं और सेवाएं शामिल हैं।

जिला खनिज न्यास संस्थान के शासी समिति की हुई बैठक

दल्लीराजहरा। जिला खनिज न्यास संस्थान के शासी समिति की बैठक कलेक्टर एवं जिला खनिज न्यास संस्थान के अध्यक्ष दिव्या उमेश मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में सांसद भोजराज नाग, विधायक डोंण्डोलोहारा अनिला भेंडिया, विधायक संजारी बालोद संगीता सिन्हा, जिला पंचायत के अध्यक्ष तारणी पुणेन्द्र चंद्राकर, सहित पुलिस अधीक्षक योगेश कुमार पटेल, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं जिला खनिज न्यास संस्थान के सचिव सुनील चंद्रवंशी, अपर कलेक्टर एवं जिला खनिज न्यास संस्थान के नोडल अधिकारी अजय किशोर लकरा, अपर कलेक्टर चंद्रकांत कौशिक एवं अन्य अधिकारियों के अलावा जिला खनिज न्यास संस्थान के नामांकित सदस्य व अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे। बैठक में सर्वसम्मति से



शसन के निर्देशानुसार कार्य योजना की स्वीकृति के अलावा वित्तीय वर्ष 2025-26 में अनुमोदन की प्रत्याशा में स्वीकृत किए गए कार्यों की कार्यांतर स्वीकृति दी गई। इसके अलावा बैठक में वित्तीय वर्ष 2025-26 में माह सितंबर 2024, फरवरी 2025 के कार्यों की कार्यांतर स्वीकृति भी दी गई है। जिला खनिज न्यास संस्थान के सदस्यों ने राशि का

उपयोग पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सड़क निर्माण कार्यों के लिए अधिक से अधिक उपयोग करने पर जोर दिया। उल्लेखनीय है कि आयोजित खनिज न्यास संस्थान की बैठक में जिले में चलाए जा रहे कुपोषण मुक्ति अभियान के अंतर्गत कुपोषित बच्चों को सुपोषित बनाने हेतु उनका समुचित देखभाल सुनिश्चित करने के लिए सांसद भोजराज नाग, विधायक डोंण्डोलोहारा अनिला भेंडिया एवं विधायक संजारी बालोद संगीता सिन्हा एवं जिला पंचायत अध्यक्ष तारणी पुणेन्द्र चंद्राकर ने एक-एक कुपोषित बच्चों को गोद लिया। बैठक में सांसद भोजराज नाग ने कहा कि जिला खनिज न्यास संस्थान का कार्य एवं उद्देश्य अत्यंत महत्वपूर्ण एवं दूरगामी है। इसलिए जिला खनिज न्यास संस्थान के निधि की राशि का जनहित में उपयोग करते हुए इसका सदुपयोग किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्रभावित क्षेत्रों के

संस्थान की अध्यक्ष दिव्या उमेश मिश्रा ने कहा कि शासन के मंशानुरूप जिला खनिज न्यास संस्थान निधि के राशि का उपयोग प्रभावित क्षेत्रों के लोगों के कल्याण एवं जनहित के कार्यों में करते हुए बालोद जिले का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही जनप्रतिनिधियों एवं आम जनता के माँग के आधार पर जिला खनिज न्यास संस्था के राशि का उपयोग जिले के जरूरतमंद लोगों के मदद हेतु भी किया जाएगा। इस अवसर पर विधायक अनिला भेंडिया, संगीता सिन्हा तथा जिला पंचायत अध्यक्ष तारणी पुणेन्द्र चंद्राकर एवं जिला खनिज न्यास संस्थान के सदस्यों तथा अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी जिला खनिज न्यास संस्थान के राशि के उपयोग के संबंध में आवश्यक सुझाव दिए। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं जिला खनिज न्यास संस्थान के सचिव सुनील चंद्रवंशी ने जिला खनिज न्यास संस्थान के बैठक के एजेण्डे के संबंध एवं विगत वर्षों के कार्यों की प्रगति के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जिला खनिज न्यास संस्थान के पास उपलब्ध निधि का कम से कम 60 प्रतिशत उच्च प्राथमिकता क्षेत्रों में उपयोजित करने का प्रावधान है। इसके अंतर्गत उच्च प्राथमिकता

वाले क्षेत्रों के तहत पेयजल आपूर्ति, पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण के उपाय, स्वास्थ्य देख-भाल, शिक्षा, कृषि एवं अन्य संबद्ध गतिविधियां, महिला एवं बाल कल्याण, वृद्ध एवं निशक्तजन के कल्याण, कौशल एवं विकास एवं रोजगार, स्वच्छता, सतत जीविकोपार्जन के अलावा जन कल्याण के कार्यों के लिए इस राशि का उपयोग किया जायेगा। इसी तरह न्यास के शेष 40 प्रतिशत राशि को अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में उपयोजित किये जाने का प्रावधान है। इसके अंतर्गत न्यास के 40 प्रतिशत राशि का उपयोग अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के अंतर्गत भौतिक अधोसंरचना, सिंचाई, ऊर्जा एवं जल विभाजक विकास, सार्वजनिक परिवहन, युवा गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा मूलभूत सुविधाओं के लिए किए जाने का प्रावधान है। बैठक में खनन प्रभावित क्षेत्रों के प्रत्यक्ष प्रभावित क्षेत्रों में सर्वेक्षण कार्य, वित्तीय वर्ष 2023-24 के सीए आडिट प्रतिवेदन को डीएमएफ पोर्टल में अपलोड किए जाने एवं वित्तीय वर्ष 2023-24 के सीए आडिट कार्य किए जाने हेतु अनुमोदन भी किया गया। इसके अलावा जिला खनिज न्यास संस्थान बालोद के विजन डॉक्यूमेंट का अनुमोदन किया गया।

शमी गणेश की महाआरती में उमड़ा जनसमूह

बेमेतरा। गणेश उत्सव पर्व के पावन अवसर पर बुधवार को प्रख्यात नगर के प्राचीन श्री सिद्ध शमी गणेश मंदिर में शाम को भव्य महाआरती में सैकड़ों लोगो ने एक स्वर में आरती की। मंदिर का सभाकक्ष खचाखच भरा रहा। इस भव्य आयोजन में मदकूट्रीप धाम के मंडलेश्वर रामरूपदास महाराज का विशेष सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की विशेषता रही कि नगर के अन्य प्रमुख मंदिरों-महामाया मंदिर, शारदा मंदिर, राम कृष्ण मंदिर, शक्ति माई मंदिर, लखनौ देवी मंदिर के पुजारियों को भी आमंत्रित किया गया था। सभी पुजारियों ने संयुक्त रूप से भगवान गणेश की आरती कर नगरवासियों को आशीर्वाद प्रदान किया। आरती से पूर्व शंकर नगर की मानस मंडली ने



भक्ति रस से ओतप्रोत भजनों की मधुर प्रस्तुति दी। उनकी गीतों की लहरियों ने सभी श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। निर्धारित समय पर सैकड़ों महिलाएं घरों से आरती

की थाली सजाकर मंदिर पहुंचीं, और सभी भक्तजन व पुजारियों के साथ एक स्वर में गणेश जी की आरती प्राप्रभ हुई। दीपों की लौ, घंटियों की मधुर गूंज और भजनों की ध्वनि से

रकम दोगुना होने का प्रलोभन देकर निवेशकों के साथ धोखाधड़ी करने वाला फरार आरोपी डायरेक्टर गिरफ्तार

बेमेतरा। रकम दोगुना होने का प्रलोभन देकर निवेशकों के साथ धोखाधड़ी करने वाला फरार आरोपी डायरेक्टर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि प्रार्थी योगेन्द्र साहू पिता बालाराम साहू उम्र 34 साल साकिन पतोरा थाना बेरला जिला बेमेतरा एवं अन्य निवेशकों को पी.ए.सी.एल. लिमिटेड के संचालक सुखदेव सिंह, गुरमीत सिंह, त्रिलोचन सिंह, निर्मल सिंह भंगु, सुब्रत भट्टाचार्य, सिकन्दर सिंह ढिल्लन ने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर अभिकर्ताओं के माध्यम से पी.ए.सी.एल. कंपनी में रकम दुगुना करने एवं कंपनी में फायदा होगा कहकर झांसे में डालकर कंपनी में पैसा जमा करवाकर धोखाधड़ी कर कंपनी बंद कर फरार हो गया है कि रिपोर्ट पर



थाना बेरला में धारा 420, 409, 120 (बी), 34 भादवि, धारा 3,4, ईनामी चिट एवं धन परि. स्कीम पाबंदी अधि. 1978 एवं धारा 10 छ.ग. निक्षेपको के संरक्षण अधि. 2005 अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। जिस पर मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक रामकृष्ण साहू के निर्देशानुसार, अति. पुलिस अधीक्षक ज्योति सिंह एवं एसडीओपी बेमेतरा

मनोज तिकी, एसडीओपी बेरला विनय कुमार के मार्गदर्शन में टीम गठित कर फ रार आरोपियों के पिता तलाश हेतु विवेचना कार्यवाही में लगाया गया। विवेचना के दौरान प्रकरण में पूर्व में आरोपी डायरेक्ट सुखदेव सिंह, त्रिलोचन सिंह, निर्मल सिंह भंगु, गुरमीत सिंह, सुब्रत भट्टाचार्य, सिकन्दर सिंह ढिल्लन को गिरफ्तार कर धारा 173(8) द.प्र.स. के तहत

अभियोग पत्र तैयार कर न्यायालय पेश किया गया है। आरोपी नरेन्द्र सिंह मेहता पिता स्व. प्रताप सिंह मेहता उम्र 68 साल निवासी गोविंद वेली, मकान नं. 421 थाना सिटी थाना रूपनगर जिला रूपनगर, पंजाब को थाना बेमेतरा के अपराध धारा 420,409,120 (बी), 34 भादवि, धारा 3, 4 ईनामी चिट एवं धन परि. स्कीम पाबंदी अधि. 1978 एवं धारा 10 छ.ग. निक्षेपको के संरक्षण अधि. 2005 में गिरफ्तार कर माननीय जे.एम.एफ.सी. न्यायालय रूपनगर पंजाब में पेश कर ट्रॉजस्ट रिमाण्ड लेकर थाना बेमेतरा लाया गया है, जिसे थाना बेरला के अपराध में फॉर्मल गिरफ्तारी किया गया है। प्रकरण के अन्य डायरेक्टरों व आरोपियों की पता तलाश जारी है।

भाजपाइयों ने पीएम मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं पर जीएसटी दरों में भारी कटौती के लिए जताया आभार



बालोद। जीएसटी परिषद ने आम सहमति से माल एवं सेवा कर में व्यापक सुधारों को मंजूरी दे दी। इन सुधारों के तहत साबुन, साईफिल, टीवी और व्यक्तिगत स्वास्थ्य तथा जीवन बीमा पॉलिसी जैसे आम उपयोग के उत्पादों पर जीएसटी की दरों में उम्मीद से अधिक बड़ी कटौती की गयी है। जीएसटी में 5% और 18% की दो-स्तरीय कर संरचना को मंजूरी दी गयी है। गुटखा, तंबाकू और तंबाकू उत्पादों तथा सिगरेट को छोड़कर सभी उत्पादों पर

नई दरें 22 सितंबर यानी नवरात्रि के पहले दिन से लागू होंगी। व्यक्तिगत उपयोग की लगभग सभी वस्तुओं पर दरों में बड़ी कटौती की गयी है। बालोद भाजपा एवं विभिन्न संगठनों ने केंद्र सरकार के फैसले पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इसका स्वागत किया है। भाजपाइयों ने पीएम मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं पर जीएसटी दरों में भारी कटौती के लिए हार्दिक आभार जताया है।

ये बदलाव जनता की जेब पर बोझ कम करेंगे
भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश महामंत्री शाहिद खान ने बताया कि, ये बदलाव जनता की जेब पर बोझ कम करेंगे। रोज के सामान, खाना की चीजें और छोटी गाड़ियां सस्ती हो जाएंगी। व्यक्तिगत, परिवार, और बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा पर 18 टैक्स हट गया है। इससे बीमा लेना सस्ता होगा और ज्यादा लोग इसे ले सकेंगे। सीमेंट पर टैक्स 28 से 18 हुआ, तो घर बनाने या मरम्मत का खर्च थोड़ा कम होगा।

देशवासियों को दिवाली से पहले मोदी सरकार का ऐतिहासिक तोहफा
बालोद भाजपा मंडल के अध्यक्ष अमित चोपड़ा ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए प्रधानमंत्री मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि, देशवासियों को दिवाली से पहले मोदी सरकार का ऐतिहासिक तोहफा। प्रधानमंत्री मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों का जो विजन प्रस्तुत किया था, वह साकार हो गया है।

नई पीढ़ी का यह जीएसटी सबके लिए खुशियां लेकर आया
बालोद नगरपालिका के पार्षद दीपक लोढा ने कहा, किसानों से लेकर उद्यम तक, घर बार से लेकर व्यापार तक, नई पीढ़ी का यह जीएसटी सबके लिए खुशियां लेकर आया। इस निर्णय से कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स सहित अन्य क्षेत्रों को राहत मिलेगी।

गणेशा दे रहे दर्शनार्थियों को हेलमेट लगाने का संदेश हेलमेट संगवारी द्वारा हादसों में सुरक्षा हेतु कवायद



डोंगरगांव नगर। नगर के गणेश पंडालों के माध्यम से इस बार एक अनोखी पहल देखी जा रही है। पंडालों में गणेशा द्वारा दर्शनार्थियों को सड़क सुरक्षा का संदेश दे दिया जा रहा है। पंडाल में गणेशा कह रहे हैं कि अपने सिर का खयाल रखना हर किसी को मेरे जैसा सिर बदलने का मौका नहीं मिलता है। गणेशा ने दर्शनार्थियों से हमेशा हेलमेट पहनकर ही बाईक चलाने की

अपील कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इन दिनों सड़क हादसों की संख्या काफी बढ़ गई है। इसी के मददेनजर शासन प्रशासन तथा समाजसेवियों द्वारा विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस परिपेक्ष्य में डोंगरगांव नगर के हेलमेट संगवारी तथा उसकी नंदेश्वर युवक जन जागरूकता समिति के द्वारा भी सड़क सुरक्षा को लेकर काफी

सक्रियता से सहयोग कर रहे है। इसी तारतम्य में सड़क दुर्घटनाओं को देखते हुए हेलमेट संगवारी द्वारा गणेशा की फोटोयुक्त प्लैक्स पंडालों में लगाकर हेलमेट पहनकर ही बाईक ड्राइव करने अपील कर रहे हैं। नगर की गणेश समितियों ने हेलमेट संगवारी के इस पहल को स्वीकार करते हुए अपने पंडालों में हेलमेट जागरूकता का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। बाजार चौक में मित्र मंडल की महिलाओं ने हेलमेट संगवारी के पहल का स्वागत करते हुए कहा कि हेलमेट सिर्फ जान बचाती है, इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है। नगर की नंदेश्वर युवा जनजागरूकता समिति के सदस्यों ने वाहन चलाते समय यातायात नियमों का पालन अवश्य करने रोड में बैठी गौंवांश का भी ध्यान रखने अपील की है।

जशने ईद मिलादुन्नबी पर छत्तीसगढ़ उमरा एंड वेलफेयर सोसायटी ने किया कार्यक्रम

दल्लीराजहरा। छत्तीसगढ़ उमरा एंड वेलफेयर सोसायटी द्वारा इस्लामिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।



पुरस्कार आदिल अहमद, द्वितीय पुरस्कार मायशा, तृतीय पुरस्कार अहाफाज रजा, कॉम्पीटीशन कैटेगरी में जरीन कुलसुम, अलीशा, जरनैन खान, आलिया खान, नात ए सवाल जवाब में हिस्सा लेने वाले बच्चों को सात्वना पुरस्कार दिया गया। छत्तीसगढ़ उमरा एंड वेलफेयर फाउंडेशन सोसायटी के तरफसे प्रमाण पत्र पहले- दूसरे व तीसरे स्थान सात्वना पुरस्कार नौनिहाल बच्चों को दिया गया। जिसमें नातिा प्रोग्राम (नात) प्रथम पुरस्कार सुमयला, द्वितीय पुरस्कार अमायरा हुसैन और तीसरा पुरस्कार अहाफाज रजा पुरस्कार से नवाजा गया। मजहबी इस्लामिक सवाल - जवाब मे प्रथम

शाकिर, रफीक, गुड्डन , निसार अशरफी, मंसूर अहमद अंसारी, जाफ र कुरैशी, इमरान, फजल मोहम्मद, सद्दाम, मो.रजा, मुस्तफा, शोएब, मुबारक, जुनैद अली सलामत हुसैन, रिजवान कुरैशी, ईशतियाक अली, शमशेर अली, राजु पटान, मो. इशराद, वली खान, शेखमिस्किन, लाल मोहम्मद (लालु), मो. इमरान, शौकित अली, अजीज अरजु, जावेद, रज्जाक, सैयद निसार अली, मोहम्मद इमरान, अमीन, अथान अहमद, चाँद मुबारक, शेख जावेद सहित छत्तीसगढ़ उमरा कमेटी राजहरा मुस्लिम जमात द्वारा बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

मंडल कांग्रेस कमेटी गठन को लेकर जुटे आशीष छाबड़ा



संबंधित मंडल तथा सेक्टर क्षेत्र में कार्य करने वाले जनता के बीच लोकप्रिय कांग्रेस कार्यकर्ताओं की ही पदाधिकारी बनाया जाए जिससे वे क्षेत्र की समस्याओं के प्रति सजग रहे जनहित की लड़ाई लड़ने में सक्षम रहे। कांग्रेस की रीति नीति को आत्मसात करने वाला जो देश के संविधान पर विश्वास करता हो तथा गरीबों किसानों एवं दलित वर्गों, पिछड़े वर्गों की लड़ाई लड़ने को उत्सुक हो ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता को ही मंडल कांग्रेस कमेटी में

पदाधिकारी बनाया जाएगा। साथ ही साथ पूर्व विधायक आशीष छाबड़ा ने सभी कार्यकर्ताओं को बताया कि कांग्रेस के मार्गदर्शन तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुत गांधी बिहार में बोट चोर गददी छोड़ अभियान प्रारंभ कर चुके हैं। आम जनता का उन्हें अपार जन समर्थन मिल रहा है और इस जन आंदोलन को हमें भी अपने छत्तीसगढ़ अपने बेमेतरा जिले में आम जनता के बीच लेकर जाना है। आम जनता को यह बताना है कि भाजपा के लोग किस

तह से बोट चोरी करते हैं और लोकतंत्र का गला घोटकर बेनामी में सत्ता शसन चला रहे हैं। बैठक के इस अवसर पर ललित विश्वकर्मा रवि परगनिहा रामेश्वर देवानग भरत पटेल प्रवीण शर्मा चंद्र विजय धीवर नेतराम निषाद राधे ध्रुव संदीप राजपुत विनोद परगनिहा कमलेश वर्मा कृष्णा चतुर्वेदी चंद्रशेखर परगनिहा टिकेंद्र परगनिहा चंद्र प्रकाश परगनिहा अर्पित परगनिहा सुमित राजपुत प्रकाश यादव उत्कल धीवर दुलारी वर्मा नरेंद्र धीवर मोहित साहू अर्चना देसलहरे मोनल सिन्हा विक्की साहू गीता साहू नारायण पाल बबली सोनवानी जगेश्वर पटेल जितेंद्र जोशी डेविड महिलांग बलदाऊ पटेल नरेंद्र धीवर प्रवीण शर्मा चेतन बंजारे राजेंद्र वर्मा रामस्वरूप वर्मा अनिल वर्मा गनेंद्र साहू उत्तम पाटील निलेश वर्मा बलराम पटेल राजकुमार पारकर सहदेव सिन्हा लवकुश ठाकुर सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

ये बदलाव देश की आर्थिक प्रगति में क्रांतिकारी बदलाव लाएंगे

बालोद नगरपालिका उपाध्यक्ष कमलेश सोनी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जीएसटी नियमों में संशोधन करने के उनके निर्णय के लिए बधाई और धन्यवाद दिया है। ये बदलाव देश की आर्थिक प्रगति में क्रांतिकारी बदलाव लाएंगे। दैनिक आवश्यक वस्तुओं, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कृषि पर संशोधित स्टेब के साथ जीएसटी सुधारों का स्वागत करते हैं। यह गरीब-समर्थक, विकासोन्मुखी निर्णय किसानों से लेकर व्यवसायों तक समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित करेगा।

इन सुधारों से मध्यम वर्ग और व्यापारिक समुदाय को फायदा
बालोद भाजपा शहर मंडल के पूर्व महामंत्री निवेश वर्मा ने कहा कि, इन सुधारों से मध्यम वर्ग और व्यापारिक समुदाय को फायदा होगा। 12 फीसदी वाले स्लैब में शामिल 99 फीसदी वस्तुओं को 5 फीसदी वाले तथा 28 फीसदी वाले स्लैब में शामिल 90 फीसदी वस्तुओं को 18 फीसदी वाले कर दर में स्थानांतरित करने से अधिकांश उपभोक्त 13ों पर कर का बोझ काफी हद तक कम हो जाएगा।

मोदी सरकार ने सस्ती स्वास्थ्य सेवा की दिशा में उठाया बड़ा कदम
बालोद नगरपालिका के पार्षद गिरिजेश गुप्ता ने कहा कि, अब जीवनरक्षक दवाओं पर जीएसटी पूरी तरह खत्म कर दी गई है। 33 जरूरी दवाओं पर 12% टैक्स हटाकर शुन्य कर दिया गया, जबकि कैन्सर और दुर्लभ बीमारियों की तीन दवाओं पर 5% से जीएसटी शुन्य किया गया। बाकी कई दवाओं पर टैक्स 12% से घटाकर 5% हुआ। इससे इलाज सस्ता होगा और मरीजों को राहत मिलेगी।

देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक कदम
कर सलाहकार लकी जैन का कहना है कि, ये सुधार एक परिवर्तनकारी कदम हैं, जो किसानों, एमएसएमई, छोटे व्यापारियों, महिलाओं, युवाओं और मध्यम वर्ग को राहत प्रदान करते हैं, साथ ही पूरे भारत में व्यापार करने में आसानी सुनिश्चित करते हैं। यह केवल एक नीतिगत बदलाव नहीं, यह नागरिकों को सशक्त बनाने और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक कदम है।

जिला प्रशासन द्वारा एक पहल, विजयी भव जागरूकता अभियान कार्यक्रम

रायपुर। प्रगति कॉलेज में जिला प्रशासन रायपुर द्वारा एक जागरूकता अभियान के तहत ‘‘विजयी भव- जीत के सफ़र पर चलो’’ कार्यक्रम के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को वक्ता डॉ. कामिनी बावनकर, जिला परियोजना अधिकारी द्वारा साक्षरता सप्ताह के अंतर्गत बच्चों से शपथ ग्रहण करवाकर शिक्षा के प्रति जागरूक किया। दुसरे वक्ता डॉ. चुन्री लाल शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा करियर मार्गदर्शन के अंतर्गत अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और अपने जीवन में सफल होने का मार्ग बताया। वहीं तीसरे वक्ता गोरखनाथ पटेल द्वारा साइबर सुरक्षा और पॉक्सो एक्ट के अंतर्गत बच्चों की सुरक्षा के बारे में जानकारी दी गई। चौथे वक्ता टी. के. भोई द्वारा यातायात सुरक्षा के अंतर्गत सड़क सुरक्षा एवं हेलमेट के प्रयोग करने की बात पर जोर दिया, साथ ही ट्रैफ़िक नियमों के प्रति बच्चों का ध्यान आकर्षित किया। पाँचवे वक्ता श्री अजय श्रीवास्तव द्वारा महिला एवं बाल विकास के अंतर्गत ड्रस एवं डिजिटल ड्रस के बारे में जानकारी दी गई एवं नषा मुक्ति के लिए बच्चों को जागरूक किया। छठवे वक्ता श्री देवप्रकाश कुर्रे द्वारा सर्प एवं कुत्ते के काटने के उपरांत प्राथमिक उपचार के बारे में सभी को जागरूक किया। साथ ही हार्ट-अटैक से बचने के लिए प्राथमिक उपचार से अवगत कराया। इस जागरूकता कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. सौम्या नैयर, एडमिनिस्ट्रेटर, साथ ही वाणिज्य, प्रबंधन, कम्प्यूटर विज्ञान, शिक्षा विभागों के समस्त विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

रायपुर, दुर्ग संभाग में भारी वर्षा की चेतावनी दी मौसम विभाग ने

रायपुर। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि रायपुर और दुर्ग संभाग में आगामी 24 घंटे में भारी वर्षा होने का पूर्वानुमान है। वहीं बिलासपुर एवं बस्तर संभाग में भी अच्छी वर्षा होगी। मौसम विभाग के वैज्ञानिक डॉ. चन्द्रा ने बताया कि कम दबाव का क्षेत्र तथा द्रोणिका दक्षिणी क्षेत्र में सक्रिय होने के कारण फिलहाल अच्छी वर्षा हो रही है। उन्होंने बताया कि उत्तरी छत्तीसगढ़ में अपेक्षाकृत कम वर्षा होगी। इधर अगले 24 घंटो में कोणडागांव, कांकेर, नारायणपुर, रायपुर, सक्ती और सारंगढ़- बिलाईगढ़ में भारी बारिश होने की संभावना है। आपदा प्रबंधन विभाग ने नदियों के जल स्तर को बढ़ता देख तटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को विशेष सावधानी बरतने की चेतावनी है। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार एक निम्न दबाव का क्षेत्र उत्तर पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना हुआ है, यह 24 घंटे में और अधिक प्रबल होने की संभावना है। इसके पश्चिम उत्तर पश्चिम दिशा में आगे बढ़ते हुए उड़ीसा की तरफ जाने की संभावना है। मानसून द्रोणिका माध्य समुद्र तल पर बीकानेर, जयपुर, दतिया, सीधी, झारसुगुड़ा, पुरी, उत्तर पश्चिम बंगाल की खाड़ी में स्थित निम्न दाब के केंद्र तक स्थित है। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में अधिकांश स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने अथवा गरज चमक के साथ छोट्टे पड़ने की संभावना है। प्रदेश में एक दो स्थानों पर गरज चमक के साथ वज्रपात होने और भारी वर्षा होने की संभावना है। भारी वर्षा का क्षेत्र मुख्यतः रायपुर संभाग और दुर्ग संभाग की जिले संभावित है।

तेज अंधड़ के साथ वर्षा और बिजली चमकने से विद्युत की आंख मिचौली से उपभोक्त । परेशान रहे

रायपुर। राजधानी में पिछले 24 घंटे से हो रही अनवरत वर्षा के कारण निचली एवं कई गंदी बस्तियों में जल भराव होने की शिकायत मिली हैं। वहीं विद्युत की आंख मिचौली से उपभोक्ता लोग परेशान रहे। विद्युत विभाग से मिली जानकारी के अनुसार राजधानी सहित कई अन्य क्षेत्रों में पिछले 24 घंटे से अनवरत वर्षा हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार दक्षिणी छत्तीसगढ़ तथा मध्य छत्तीसगढ़ कहे जाने वाले रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर में इस समय अच्छी वर्षा हो रही जिसके कारण नदी नाले उफान पर चले रहे हैं। वहीं कई स्थानों पर जल भराव की शिकायत आ रही है। इधर राजधानी में गणोत्सव की धूम है, कल वर्षा होने के कारण भक्त भगवान के दर्शन करने नहीं जा पाए, जिसके कारण आयोजकों को भी परेशानी हुई। कई स्थानों पर विशेष पंडाल लगाए गए। नवीन बाजार स्थित गणोत्सव समति में इन दिनों भण्डारा भी चल रहा है। यहां पर भक्तों को आपार भीड़ रहती है, वहीं समता कालोनी, गुडियारी, रामसागर पारा तथा पुरानी बस्ती में भी भक्तों को कल झंझकी नहीं देख पाए। राजधानी में राजकुमार कालेज, विवेकानंद आश्रम सहित रायपुर के पश्चि़त क्षेत्र कहे जाने वाले कॉलेजवार कोटा तथा शंकरनगर सहित कई वाडों में बिजली गोल रही है। वहीं मच्छारों के कारण लोग परेशान रहे। विद्युत मंडल ने लोगों को सहायता के रूप में स्ट्रीट लाइट को जला दी थी, लेकिन रात को 7.30 बजे से 10.30 बजे तक लाइट की आपूर्ति सामान्य नहीं हो पाई। विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारी-कर्मचारी मरम्मत एवं निर्माण कार्य में जुटे रहे। राजधानी में अनेक स्थानों पर गंदकी फैली रही, जिसके कारण नगर निगम अमले को आज सुबह से साफ-सफाई करनी पड़ी।

कलेक्टर रायपुर ने मेसर्स व्हीएनआर एग्रीमैट्रीक्स जारी किया नोटिस

रायपुर। कलेक्टर रायपुर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने रायपुर जिले के ग्राम गोमचो स्थित निजी उर्वरक विक्रेता मेसर्स व्ही.एन.आर. एग्रीमैट्रीक्स को उर्वरक नियंत्रण आदेश के उल्लंघन के मामले में कारण बताओ नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। कलेक्टरने यह कार्रवाई कृषि विभाग के उपसंचालक कृषि सतीश अवस्थी द्वारा गठित उर्वरक निरीक्षक दल द्वारा बीते दिनों संबंधित फर्म के औचक निरीक्षण के दौरान वहां पाई गई अनियमितता के चलते की है। उर्वरक विक्रेता मेसर्स व्ही.एन.आर. एग्रीमैट्रीक्स के यहां से 41.17 मीट्रिक टन उर्वरक जब्त की गई है। गौरतलब है कि कृषि विभाग के निरीक्षण दल द्वारा 30 अगस्त को उक्त उर्वरक विक्रेता फर्म का औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान संबंधित विक्रेता द्वारा उर्वरक (नियंत्रण) आदेश 1985 का उल्लंघन का मामला पाए जाने पर गोदाम में भंडारित कुल 41.17 मीट्रिक टन उर्वरक के जव्ती की कार्रवाई की गई। कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा है कि किसानों को निर्धारित दर पर गुणवत्तायुक्त उर्वरक उपलब्ध कराना शासन की प्राथमिकता है। इसमें किसी भी तरह की अनियमितता और लापरवाही का मामला पाए जाने पर संबंधितों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। रायपुर जिले में कृषि विभाग के अधिकारियों के टीम किसानों को सही दाम पर उर्वरक उपलब्ध कराने और कालाबाजारी पर कड़ौ से रोक लगाने के लिए लगातार उर्वरक विक्रेता संस्थानों की जांच-पड़ताल कर रही है। ग्राम गोमचो स्थित निजी उर्वरक विक्रेता मेसर्स व्ही.एन.आर. एग्रीमैट्रीक्स के यहां औचक निरीक्षण कार्रवाई में सहायक संचालक कृषि श्रीमती स्मृति कोल्हे ठाकुर, उर्वरक निरीक्षक श्रीमती अंजनी साहू एवं श्री अनिल वर्मा शामिल रहे।

राजधानी

करमा तिहार के रंग में डूबा मुख्यमंत्री निवास

संस्कृति को जीवंत बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी,नैतिक कर्तव्य भी

■ मुख्यमंत्री करमा तिहार 2025 कार्यक्रम में हुए शामिल, करमा दलों को सम्मानित कर किया प्रोत्साहित

रायपुर/ संवाददाता

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय विगत दिवस मुख्यमंत्री निवास, नवा रायपुर में छत्तीसगढ़ आदिवासी कंवर समाज युवा प्रभाग रायपुर द्वारा आयोजित प्रकृति पर्व भादो एकादशी व्रत ङ्क 2025 करमा तिहार कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने पारंपरिक विधान से पूजा-अर्चना कर कार्यक्रम की शुरुआत की। मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी संस्कृति हमारे पूर्वजों की अमूल्य धरोहर है। इस संस्कृति एवं परंपरा को जीवंत बनाए रखना न केवल हमारी

जिम्मेदारी, बल्कि नैतिक कर्तव्य भी है। ऐसे पर्व और परंपराएँ समाज को एकजुट होने का अवसर देती हैं, जिससे स्नेह, सद्भाव एवं सौहार्द की भावना विकसित होती है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि कंवर समाज के युवाओं द्वारा राजधानी रायपुर में करमा तिहार का आयोजन किया जा रहा है। हमारी आदिवासी संस्कृति में अनेक प्रकार के करमा तिहार मनाए जाते हैं। आज एकादशी का करमा तिहार है, जो हमारी कुंवारी बेटियों का पर्व है। इस करमा तिहार का उद्देश्य है कि हमारी बेटियों को उत्तम वर और उत्तम गृहस्थ जीवन मिले। भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना कर बेटियाँ अच्छे वर और अच्छे घर की कामना करती हैं। इसके बाद दशहरा करमा का पर्व आता है, जिसमें विवाह के पश्चात पहली बार जब बेटी मायके आती है, तो वह उपवास रखकर विजयादशमी का पर्व अमूल्य धरोहर है। इस संस्कृति एवं परंपरा को जीवंत बनाए रखना न केवल हमारी



के दीर्घायु जीवन की कामना करती हैं। यह एक कठिन व्रत होता है, जिसमें माताएँ चौबीस घंटे तक बिना अन्न-जल ग्रहण किए उपवास करती हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यदि छत्तीसगढ़ की बात करें तो यहां अंग्रेजों के विरुद्ध 12 आदिवासी क्रांतियाँ हुईं। हमारी सरकार नया रायपुर स्थित ट्राइबल म्यूजियम में आदिवासी संस्कृति के

महानायकों को छवि को आमजन की जागरूकता के लिए प्रदर्शित करने मॉडल के रूप में उकेरा जा रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के 25 वर्ष पूरे होने पर आयोजित रजत जयंती समारोह में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को आमंत्रित किया जा रहा है। उनके करकमलों से इस म्यूजियम का शुभारंभ किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारी सरकार आदिवासी समाज के सशक्तिकरण

दिल की बीमारी से जूझ रही मासूम के इलाज के लिए मंत्री जायसवाल ने दिलाया भरोसा....

■ पापा, मैं ठीक हो जाऊंगी ना रायपुर के एडवांस कार्डियक इस्टिट्यूट में होगा रियूमेटिक हार्ट डिजीज (आरएचडी) का इलाज

रायपुर । संवाददाता

बीजापुर जिले भोपालपटनम ब्लॉक के वरदली गांव की 7वीं कक्षा में पढ़ने वाली 11 वर्षीय शांभवी गुरला की मासूम आंखों में एक ही सवाल था— पापा, मुझे क्या हुआ है, मैं ठीक हो जाऊंगी ना खेती-किसानी कर परिवार का गुजारा करने वाले

उसके पिता इस सवाल पर अक्सर चुप हो जाते थे। तीन महीने पहले जिला अस्पताल बीजापुर में जब डॉक्टरों ने बताया कि शांभवी को रियूमेटिक हार्ट डिजीज (क्राष्ठ) है, तो पिता के पांव तले जमीन खिसक गई। डॉक्टरों ने रायपुर में इलाज कराने की बात कही, लेकिन परिवार को लगा कि रायपुर में इलाज में तो बहुत ज्यादा खर्च लगता होगा, ये सोच कर परिवार की उम्मीदें टूटने लगीं। घर में हर रोज यही चर्चा होती—अब क्या होगा हम अपनी बेटी का इलाज कैसे कराएंगे मां रोती और शांभवी को सीने से लगाकर कहती—बेटा, सब ठीक होगा। लेकिन उसके पिता की आंखों में चिंता साफ झलकती थी। आखिरकार उन्होंने हिम्मत जुटाई और बेटी को लेकर



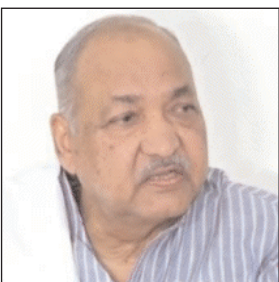
सीधे स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के पास पहुंचे। स्वास्थ्य मंत्री ने बच्ची से मुलाकात की और तुरंत ही रायपुर के एडवांस कार्डियक इंस्टिट्यूट में डॉ. स्मित श्रीवास्तव से बात की। स्वास्थ्य मंत्री ने निर्देश दिया कि इलाज तुरंत शुरू किया जाए। खर्च की चिंता मत करें, सरकार पूरी जिम्मेदारी लेगी। स्वास्थ्य मंत्री की यह बात सुनते ही शांभवी की मां की आंखों से

कांग्रेस जिलाध्यक्षों की बैठक में रविंद्र चौबे के बयान पर बवाल

■ चौबे के बयान को अनुशासनहीनता करार देते हुए चौबे के खिलाफ कार्रवाई की मांग

रायपुर । संवाददाता

कांग्रेस जिलाध्यक्षों की बैठक में पूर्व मंत्री रविंद्र चौबे के बयान को लेकर खासा विवाद देखने को मिला। बैठक में कई नेताओं ने इस बयान को अनुशासनहीनता करार देते हुए चौबे के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। इसके बाद अनुशासनहीनता के खिलाफ एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस मामले को लेकर



नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने कहा कि वरिष्ठ नेताओं के बयान कई बार गलत तरीके से प्रचारित किए जाते हैं और इसके पीछे उनके कुछ चमचे (हिस्सेदार) होते हैं, जो माहौल बिगाड़ते हैं। उन्होंने सभी जिलाध्यक्षों और नेताओं से अपील की कि वे अपने समर्थकों और कार्यकर्ताओं को संयमित रखें ताकि पार्टी के भीतर कोई

अनावश्यक विवाद खड़ा न हो। डॉ. महंत ने यह भी कहा कि कुछ लोग मनमर्जी से कभी किसी की मुख्यमंत्री, तो कभी किसी को प्रदेश अध्यक्ष घोषित कर देते हैं, जो ठीक नहीं है। बता दें कि पूर्व मंत्री रविंद्र चौबे ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के जन्मदिन के अवसर पर कहा था कि छत्तीसगढ़ की जनता आज भी भूपेश बघेल के नेतृत्व को पसंद करती है। इस बयान ने पार्टी में हलचल मचा दी थी। हालांकि विवाद बढ़ने पर चौबे ने सफाई दी कि कांग्रेस में सामूहिक नेतृत्व की परंपरा है और पार्टी मिलकर फैसले लेती है। बाद में उन्होंने अपने बयान से यू-टर्न लेते हुए स्पष्ट किया कि कांग्रेस हमेशा से कलेक्टिव लीडरशिप में विश्वास रखती है।

टोमन साहू पैरा ओलंपिक में भाग लेने कोरिया जाएंगे 30 को

रायपुर।

जवान टोमन साहू निवासी नवागांव अहिंवारा जिला बालोद जो अंतरराष्ट्रीय स्तर के तीरंदाज हैं ने प्रेस क्लब रायपुर पहुंचकर जानकारी दी कि उन्होंने अभी हाल ही में चेक गणराज्य में आयोजित अंतरराष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रदेश एवं देश का गौरव बढ़ाते हुए चौथा स्थान प्राप्त किया है। वे पैराओलंपिक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में 30 सितंबर को जो कोरिया में आयोजित हो रही है में भाग लेने जाएंगे। उन्होंने बताया कि सीआरपीएफ मुख्यालय हैदराबाद एवं रायपुर स्थित कार्यालय से उन्हें तीरंदाजी प्रतियोगिता के लिए अच्छा सहयोग प्राप्त हो रहा है। अनेक कठिनाईयों को झेलते हुए उन्होंने पैरा ओलंपिक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए रात दिन मेहनत की है।

संपत्ति करों के युक्तियुक्तकरण के लिए उप मुख्यमंत्री ने सभी नगरीय निकायों की ली बैठक

विसंगतियां दूर करने संपत्ति कर सुधार अति आवश्यक-अरुण साव

■ वार्षिक भाड़ा मूल्य को संपत्ति के वर्तमान मूल्यों के अनुरूप अपडेट करने के दिए निर्देश

■ महापौर, आयुक्त, नगर पालिका और नगर पंचायत अध्यक्ष तथा सीएमओ वर्चुअल बैठक में हुए शामिल

रायपुर/ संवाददाता

उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने आज नगरीय निकायों में संपत्ति करों के युक्तियुक्तकरण के लिए बैठक ली। मंत्रालय, महानदी भवन में आयोजित वर्चुअल बैठक में राज्य के सभी नगर निगमों के महापौर व आयुक्त तथा नगर



पालिकाओं व नगर पंचायतों के अध्यक्ष और मुख्य नगर पालिका अधिकारी शामिल हुए। उप मुख्यमंत्री श्री साव के साथ नगरीय प्रशासन विभाग के सचिव डॉ. बसवराजु एस. और संचालक श्री आर. एक्का भी मंत्रालय से बैठक में ऑनलाइन जुड़े। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने बैठक में कहा कि नगरीय निकायों के कार्यों में प्रवेश की छवि निर्मित होती है। शहर में नागरिकों को बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराना संबंधित नगरीय निकाय की

जिम्मेदारी है। उन्होंने महापौरों तथा नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों के अध्यक्षों से कहा कि शहर को आगे ले जाने का जिम्मा आप पर है। शहर में संपत्ति करों के मूल्यांकन और उनमें सुधार की शुरुआत अपने कार्यालयों और अपने घरों से करें। उन्होंने कहा कि वार्षिक भाड़ा मूल्य को वर्तमान संपत्ति मूल्यों के अनुरूप अपडेट करने से राजस्व में अच्छी बढ़ोतरी होगी। इससे कर भार सभी संपत्ति मालिकों पर समानुपातिक रूप से वितरित होगा। उन्होंने

कहा कि अधिक राजस्व से निकाय वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनेंगे और उन्हें अनुदानों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। बढ़े हुए राजस्व से नागरिकों को तेजी से बेहतर जनसुविधाएं उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने नगरीय निकायों से कहा कि राज्य शासन की मंशा ई-गवर्नेंस मॉडल के माध्यम से नागरिकों को पारदर्शी और सुगम सेवाएं प्रदान करने की है। यह शहरों के चहुंमुखी विकास और त्वरित नागरिक सेवाओं के लिए जरूरी है। इससे साफ-सफाई, पानी और

पर विशेष जोर देती रही है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजादी के लगभग 40 वर्षों बाद आदिवासी विभाग का पृथक मंत्रालय बनाकर आदिवासी समाज के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हीं के बताए मार्ग पर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी आदिवासी समाज के बेहतरि एवं समग्र विकास के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान एवं विशेष पिछड़ी जनजाति समाज के लिए पीएम जनमन योजना का संचालन कर रहे हैं, जिससे हितग्राहियों को शत-प्रतिशत योजनाओं का लाभ मिल रहा है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में 15 वर्षों तक मुख्यमंत्री रहे डॉ. रमन सिंह ने बस्तर, सरगुजा एवं मध्य क्षेत्र प्राधिकरण का गठन कर विकास को गति प्रदान करने का कार्य किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने आगे कहा कि युवा आदिवासियों को स्वरोजगार से जोड़ते हुए आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से हमने नई उद्योग नीति बनाई है।

बलौदाबाजार जिले के किसान ऑयलपाम की खेती की ओर अग्रसर



रायपुर/ संवाददाता

भारत सरकार द्वारा तिलहन फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु नेशनल मिशन ऑन एडीबल ऑयल पाम संचालित किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में किसानों को ऑयल पाम की खेती हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप जिले के कृषकों में इस नई फसल को लेकर उत्साह देखा जा रहा है। अब तक विकासखंड सिमगा के ग्राम जरौद में 2 हेक्टेयर एवं भाटापारा के ग्राम बिजराडीह में 6 हेक्टेयर, कुल 8 हेक्टेयर क्षेत्र में ऑयल पाम पौधों का रोपण कार्य पूर्ण किया जा चुका है। योजना के अंतर्गत कृषकों को प्रति हेक्टेयर 143 ऑयल पाम पौधों पर 29,000 रुपये की अनुदान राशि दिए जाने का प्रावधान है। पौधों के रखरखाव, खाद-उर्वरक, थाला निर्माण आदि हेतु प्रथम वर्ष से चौथे वर्ष तक 5,250 रुपये प्रतिवर्ष प्रति हेक्टेयर सहायता राशि दी जाएगी। इसके अतिरिक्त राज्य शासन द्वारा 2,625 रुपये प्रति हेक्टेयर टॉप-अप सहायता राशि भी प्रदान की जाएगी। अंतरवर्ती फसल हेतु प्रथम से चौथे वर्ष तक अधिकतम 22,375 रुपये प्रति हेक्टेयर अनुदान राज्य शासन द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा है। सिंचाई सुविधा

हेतु न्यूनतम 2 हेक्टेयर क्षेत्र में ऑयल पाम की खेती करने वाले कृषक को एक बोरेवेल हेतु 50,000 रुपये तथा प्रति हेक्टेयर अधिकतम 25,000 रुपये प्रति यूनिट की अनुदान सहायता दी जाएगी। इसी प्रकार पम्पसेट हेतु 27,000 रुपये तथा प्रति हेक्टेयर 16,500 रुपये, फेंसिंग हेतु सीमेंट पोल एवं चौनलंक पर 1,08,970 रुपये प्रति हेक्टेयर, तथा ड्रिप प्रतिस्थापन हेतु 14,130 रुपये प्रति हेक्टेयर के अतिरिक्त 8,635 रुपये टॉप-अप सहायता राशि प्रदान की जा रही है। ऑयल पाम की खेती से प्रति एकड़ 10 से 12 टन वार्षिक उत्पादन प्राप्त होता है। इस न्यूनतम श्रम की आवश्यकता होती है तथा पौधों में रोग लगने की संभावना भी कम रहती है। इसके कारण दवाई पर होने वाला व्यय नगण्य रहता है। इस फसल की विशेषता यह भी है कि कृषकों को दलालों से मुक्ति मिलती है क्योंकि उपज का ऋय सीधे अनुबंधित कंपनियों द्वारा किया जाता है। प्रारंभिक 4 वर्षों में प्रति हेक्टेयर लागत लगभग 25,000 से 30,000 रुपये आती है, जिसके अंतर्गत भूमि तैयारी, पौधरोपण, सिंचाई एवं खाद-उर्वरक सम्मिलित हैं। चौथे से छठे वर्ष तक प्रति हेक्टेयर 70,000 रुपये से 2,70,000 रुपये तक की अनुमानित आय प्राप्त होती है।

बिजली आपूर्ति की व्यवस्थाएँ और बेहतर होंगी। श्री साव ने बताया कि वर्ष 2016 के बाद से संपत्ति कर प्रणाली में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके चलते कई नगरीय निकायों में विसंगतियां उत्पन्न हो गई हैं। उन्होंने सभी महापौरों और अध्यक्षों से संपत्ति करों में सुधार के कार्यों को पूरी शिद्दत और गंभीरता से करने का आग्रह किया। श्री साव ने बैठक में नगरीय निकायों को अटल परिसरों और नालंदा परिसरों के निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी निर्माण कार्यों को अच्छी गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में पूर्ण करने को कहा। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों को रोज प्रातः भ्रमण कर निर्माण और साफ-सफाई के कार्यों का निरीक्षण करने को भी कहा। उन्होंने निविदा प्रक्रिया में त्रुटि या लापरवाही पाए जाने पर संबंधितों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी दी। नगरीय प्रशासन विभाग की उप सचिव डॉ. रेणुका श्रीवास्तव, राज्य शहरी विकास अधिकरण (स्व) के सीईओ श्री शशांक पाण्डेय और नगरीय प्रशासन विभाग के अपर संचालक श्री पुलक भट्टाचार्य भी बैठक में मौजूद थे।

लोकतंत्र प्रहरी

संपादकीय

हिमालय क्षेत्र इस समय भयानक तबाही के दौर से गुजर रहा है। उत्तराखंड से लेकर जम्मू-कश्मीर तक, नदियां उफान पर हैं, पहाड़ दरक रहे हैं और ज़िंदगियां दौब पर लगी हैं। ये आपदाएं और जानमाल का नुकसान गंभीर चेतावनी है।

जम्मू में वैष्णो देवी धाम के पास हुए लैंडस्लाइड में मृतकों की संख्या 32 तक जा पहुंची है। यात्रा रोकनी पड़ी है और फंसे हुए यात्रियों को निकाल कर सुरक्षित घर पहुंचाने की कोशिश जारी है। जम्मू ने केवल 20

घंटों में ही 10 साल की सबसे ज्यादा बारिश देख ली। राज्य के कई हिस्सों में कमोवेश ऐसे ही हालात हैं। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने झ्र पर बताया कि भारी बारिश से आम जनजीवन प्रभावित हुआ है।

इस मौनसून सीजन में यह सीन बार-बार दिख रहा है। इसी महीने की शुरुआत में उत्तराखंड के धराली में बादल फटने के बाद आए फ्लैश फ्लट ने पूरे कस्बे को तबाह कर दिया। फिर चमोली के थराली में आफत

बरसी। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में एक बार पहले भी, इसी 14 तारीख को बादल फटने से भारी तबाही मची थी। मचैल माता यात्रा के रास्ते पर आई प्राकृतिक आपदा की वजह से जन-धन की हानि हुई थी।

इन घटनाओं पर गौर करें तो आपदाओं में जान गंवाने वालों में बड़ी तादाद पर्यटकों की रही। धराली, उत्तराखंड के चार धाम में से एक, गंगोत्री के रूट पर पड़ता है। इसी तरह वैष्णो देवी के दर्शन के लिए

सालभर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। ये ह्रादसे सबक हैं कि पहाड़ी क्षेत्रों में मौजूद भीड़भाड़ वाले पर्यटन और धार्मिक क्षेत्रों में ऐसे इंतजाम करने की ज़रूरत है, जिससे किसी अनहोनी की सूरत में लोगों को तुरंत निकासता जा सके।

प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता, लेकिन उनसे होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। इसके लिए अल्टी वॉर्निंग सिस्टम को बेहतर

करने की ज़रूरत है। बाढ़ और भूस्खलन के खतरे वाले इलाकों में लगातार निगरानी से खतरों की पूर्व सूचना मिल सकती है। मौनसून के सीजन में पहाड़ों की यात्रा वैसे भी मुश्किल भरी हो जाती है, तो इस मौसम में यात्रियों की संख्या सीमित करने पर विचार किया जा सकता है।

मौसम विभाग ने जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश का अलर्ट दिया है। दूसरे राज्यों के पर्यटक और श्रद्धालु अब भी विभिन्न जगहों पर फंसे हुए हैं। अभी इन सभी की सुरक्षित घर वापसी और राहत-बचाव पर फोकस होना चाहिए। साथ में, ऐसी नीतियों की ज़रूरत है, जिसमें पहाड़ों की संवेदनशीलता का ख्याल रखा गया हो।

2 सितंबर 2000 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण सरल का निर्वाण दिवस वे शासन की दृष्टि में नहीं समाज की दृष्टि में राष्ट्रकवि..

रमेश शर्मा

सुप्रसिद्ध राष्ट्र कवि श्रीकृष्ण सरल का पूरा जीवन भारत के क्रांतिकारियों की गाथा लिखने और गाने में बीता । उन्होंने अपना पूरा जीवन और अपनी श्रम साधना से कमाया हुआ धन भी क्रांतिकारियों की गौरव गाथा को एकत्र करने और उन्हें समाज के सामने लाने में समर्पित किया ।

वस्तुतः वे एक ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिन्होंने स्वतंत्रता से पहले स्वतंत्रता के लिये समाज का जागरण किया और स्वतंत्रता के बाद स्वतंत्रता को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिये राष्ट्र जागरण किया । उनका जन्म 1 जनवरी 1919 को मध्यप्रदेश के अशोकनगर में हुआ । उन दिनों अशोकनगर पृथक से जिला नहीं था । अशोकनगर तब गुना जिले के अंतर्गत ग्वालियरियासत का अंग हुआ करता था । उनका परिवार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार था । 1857 में उनके परिवार जनों द्वारा टोपे के नेतृत्व में 1857 की क्रांति में बलिदान दिया था तो पिता भगवती प्रसाद विस्थरे ने सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद के अज्ञातवास में सहयोगी रहे । और माता यमुना देवी भारतीय

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जी से प्रेरित होकर अमर बलिदानी भगत सिंह की माता श्रीमती विद्यावती जी के सानिध्य में राष्ट्र के प्राण दानियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अपने साहित्य का विषय बनाया। वे चाहते थे कि आने वाली पीढ़ियों इन हुतात्माओं से परिचित हों और राष्ट्र निर्माण के लिये आगे आएँ । यह झलक उनकी रचनाओं में बहुत स्पष्ट है-

-जिसे देश से प्यार नहीं है
जीने का अधिकार नहीं है।
जीने को तो पशु भी जी लेते हैं,
अपना पेट भरा करते हैं,

कुछदिन दुनियाँ में रह कर
वे अन्ततःमरा करते हैं।
ऐसे जीवन और मरण को,
होता यह संसार नहीं है।

इस रचना में बहुत स्पष्ट एक सक्रिय और सुजनात्मक जीवन जीने का आह्वान है । उनकी एक अन्य रचना -

-करो या मरो, वीर की तरह,
चलो सुभित समीर की तरह,
जियो या मरो, वीर की तरह।
वीरता जीवन का भूषण
वीर भोग्या है वसुंधरा
भीरुता जीवन का दूषण
भीरु जीवित भी मरा-मरा
वीर बन उठो सदा ऊँचे,
न नीचे बहो नीर की तरह।
जियो या मरो, वीर की तरह ।:-

उनकी रचनाओं और व्यक्तित्व पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं? बनारसीदास चतुर्वेदी ने कहा था कि- भारतीय शहीदों का समुचित श्राद्ध तो सरल जी ने ही किया है। महान क्रांतिकारी पं? परमानन्द ने कहा था- सरलजी जीवित शहीद हैं।

अपने जीवन के उत्तरार्ध में सरल जी आध्यात्मिक चिन्तन की ओर मुड़े। उन्होंने तीन महाकाव्य लिखे । एक तुलसी मानस, दूसरा सरल रामायण एवं तीसरा सीतावन । इन तीनों महाकाव्यों संस्कृत भक्ति और मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा माता सीता का आदर्श चित्रण वर्णन तो है ही । इसके साथ उनके जीवन या उनके अवतरण लीला से समाज जीवन को संदेश क्या है?इसका भी संकेत है। सरल जी ने अपने व्यक्तित प्रयत्नों से 15 महाकाव्यों सहित 124 ग्रन्थ लिखे और स्वयं ही उनका प्रकाशन करया तथा अपनी पुस्तकों की 5 लाख प्रतियाँ बेचीं । इसकाम में उन्होंने अपनी सारी पूँजी लगा दी थी । क्रांति कथाओं का शोधपूर्ण लेखन करने के सन्दर्भ में अपने खर्च पर दस देशों की यात्राओं पर गये । पुस्तकों के लिखने और उन्हें प्रकाशित कराने में सरल जी की अचल सम्पत्ति से लेकर पत्नी के आभूषण तक बिक गये । उनकी क्रांति-लेखन और सर्वाधिक पन्द्रह महाकाव्य लिखने का श्रेय सरलजी को ही जाता है। उनके द्वार भारतीय सैनिकों की बलिदानी परंपराओं का स्मरण कराने के कारण पूरे समाज ने उन्हे राष्ट्रवादी कवि की उपाधि प्रदान की । लेकिन उन्होंने स्वयं को लिए -युग चारण+ ही कहा । उनके द्वारा रचित

‘मैंअमर शहीदों का चारण,
उनके गुण गाया करता हूँ ।
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है,
मैं उसे चुकाया करता हूँ।’:-
हिन्दी साहित्य की एक अद्भुत और कालजयी रचना है । मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी ने श्रीकृष्ण सरल जी के नाम पर कविता के लिए प्रति वर्ष+श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार+ आरंभ किया है। उन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा ‘भारत गौरव’ , ‘राष्ट्र कवि’ , ‘क्रांति-कवि’ , ‘क्रांति-रत्न’ , ‘अभिनव-भूषण’ ,

विचार-पक्ष

पहले से हो तैयारी

डॉ. निवेदिता शर्मा

भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के सामने इस समय सबसे गंभीर सवाल यह है कि क्या देश की बच्चियों और बच्चों की सुरक्षा उनकी धार्मिक पहचान और पर्सनल लॉ से तय होगी या फिर संविधान और संसद द्वारा बनाए गए कानून सभी पर समान रूप से लागू होंगे। यह सवाल केवल कानूनी तकनीक या न्यायिक व्याख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के भविष्य और राष्ट्र की दिशा तय करने वाला है। हाल के वर्षों में विभिन्न उच्च न्यायालयों ने मुस्लिम पर्सनल लॉ का हवाला देते हुए यह कहा कि यदि कोई मुस्लिम लड़क़ी यौवन प्राप्त कर चुकी है तो उसका विवाह, भले ही वह 18 वर्ष से कम उम्र की हो, वैध माना जाएगा। इन निर्णयों के पीछे तर्क दिया गया कि शरीयत के अनुसार यौवन विवाह की क्षमता प्रदान करता है। परंतु यह व्याख्या बच्चों के अधिकारों, संसद द्वारा बनाए गए पॉक्सो कानून और संविधान के मूलभूत सिद्धांतों को सीधी चुनौती देती है।

संसद ने 2012 में बच्चों को यौन अपराधों से बचाने के लिए पॉक्सो अधिनियम पारित किया। इसमें साफ-साफ परिभाषा दी गई कि 18 वर्ष से कम उम्र का हर व्यक्ति बच्चा है और उसके साथ किसी भी प्रकार का यौन संबंध अपराध है, चाहे वह विवाह के नाम पर हो क्यों न हो। जब अदालतें पर्सनल लॉ के आधार पर इस प्रावधान को दरकिनार करती हैं, तो केवल कानून का उल्लंघन नहीं होता, बल्कि यह एक ऐसी दोहरी व्यवस्था पैदा करता है, जो संविधान की समानता की गारंटी को कमजोर करती है।

संवैधानिक कसौटी और समानता का सवाल: संविधान के अनुच्छेद 14 सभी को समानता का अधिकार देते हैं, अनुच्छेद 15(3) महिलाओं और बच्चों को विशेष संरक्षण प्रदान करता है और अनुच्छेद 21 हर नागरिक को गरिमा और जीवन का अधिकार सुनिश्चित करता है। ये अधिकार धर्म या परंपरा पर निर्भर नहीं हैं। जब हिंदू, सिख, ईसाई, बौद्ध या पारसी बच्चियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष है, लेकिन मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत इसे 15 या 16 वर्ष में वैध ठहराया जाता है, तो यह नागरिकता की समानता के सिद्धांत पर सीधा आघात है। राष्ट्र तभी ‘एक कानून, एक सुरक्षा+ की दिशा में आगे बढ़ सकता है, जब सभी बच्चियों को उनकी धार्मिक पहचान से परे समान सुरक्षा मिले। अन्यथा भारत दोहरी व्यवस्था वाला देश बन जाता है, जहाँ एक समुदाय की बेटी को राज्य का संरक्षण मिलता है और दूसरी बेटी उसी उम्र में ‘वैवाहिक बंधन+ के नाम पर असुरक्षित छोड़ दी जाती है।

विधिक ढांचा और न्यायालयों की व्याख्या: देश में बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 और पॉक्सो अधिनियम, 2012 दोनों स्पष्ट रूप से 18 वर्ष की आयु से पहले विवाह और यौन संबंधों को अपराध घोषित करते हैं। इतना ही नहीं, उच्चतम न्यायालय ने 2017 में ईंडिपेंडेंट थॉट बनाम यूनियन ऑफ़ इंडिया के ऐतिहासिक फैसले में कहा कि यदि पत्नी की आयु 18 वर्ष



से कम है तो उसके साथ यौन संबंध बलात्कार के समान अपराध होगा। इस फैसले ने परंपरा को बच्चों की सुरक्षा से ऊपर रखने से इनकार किया और संविधान की सर्वोच्चता को स्थापित किया। बावजूद इसके, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय जैसे कुछ न्यायालयों ने मुस्लिम पर्सनल लॉ का हवाला देकर नाबालिग विवाह को मान्यता दी। वहीं, दिल्ली और केरल उच्च न्यायालय ने साफ कहा कि पॉक्सो सभी व्यक्तिगत कानूनों से ऊपर है। यह विरोधाभास अपने आप में इस आवश्यकता को रेखांकित करता है कि अब सर्वोच्च न्यायालय को सविधान पीठ गठित कर स्पष्ट और सर्वमान्य निर्णय देना चाहिए।

एनसीपीसीआर और न्यायपालिका का रुख: बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए संसद ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) बनाया। यही संस्था जब सुप्रीम कोर्ट में पहुंची तो उसकी याचिका को यह कहकर खारिज कर दिया गया कि वह ‘अजनबी+ है और मामले में उसकी लोकस स्टैंडी नहीं है। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। अगर बच्चों की वैधानिक संरक्षक संस्था को ही न्यायपालिका सुनने को तैयार न हो, तो फिर बच्चियों की आवाज कौन उठाएगा? संसद को चाहिए कि वह एनसीपीसीआर को यह अधिकार स्पष्ट रूप से प्रदान करे कि वह सीधे सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में बच्चों के अधिकारों से जुड़े मामलों में हस्तक्षेप करे।

बाल विवाह आज भी सामाजिक चुनौती: यह प्रश्न अक्सर मुस्लिम पर्सनल लॉ तक सीमित कर दिया जाता है, लेकिन सचाई यह है कि बाल विवाह पूरे देश में एक व्यापक सामाजिक समस्या है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएस-5) के अनुसार

भारत में 23 प्रतिशत लड़क़ियां 18 वर्ष से पहले विवाह कर लेती हैं। ग्रामीण इलाकों में यह दर और अधिक है। पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड और असम जैसे राज्यों में बाल विवाह की दर 30 प्रतिशत से ऊपर है। इन आँकड़ों से साफ है कि समस्या किसी एक धर्म या समुदाय की नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना और पिछड़ेपन से जुड़ी है। लेकिन जब न्यायालय पर्सनल लॉ के आधार पर बाल विवाह को वैध ठहराते हैं, तो यह सामाजिक समस्या और गहरी हो जाती है।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य और भारत की प्रतिबद्धता: भारत ने संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार संधि (यूएनसीआरसी) पर 1992 में हस्ताक्षर किए। इस संधि के अनुसार 18 वर्ष से कम आयु का हर व्यक्ति बच्चा है और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना राज्य का दायित्व है। भारत ने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी-5.3) के तहत 2030 तक बाल विवाह समाप्त करने का संकल्प भी लिया है। महत्वपूर्ण यह है कि कई मुस्लिम-बहुल देशों जैसे इंडोनेशिया, मलेशिया और बांग्लादेश ने विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष तय की है। बांग्लादेश ने 2017 में बाल विवाह निषेध अधिनियम लाकर नाबालिग विवाह को अपराध घोषित किया। यह स्पष्ट करता है कि यह धर्म का नहीं, बल्कि बच्चों की सुरक्षा और सामाजिक सुधार का वैश्विक एजेंडा है।

मुस्लिम समाज के भीतर सुधार की आवाज: मुस्लिम समाज के भीतर भी बड़ी संख्या में लोग बाल विवाह का विरोध कर रहे हैं। अनेक मुस्लिम महिला संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता इस बात पर जोर देते हैं कि इस्लाम बाल विवाह को बढ़ावा नहीं देता। पैगंबर मोहम्मद की शिक्षाओं में विवाह परिपक्वता और सहमति पर आधारित बताया

देंगे।:-

असल में मदनी का यह बयान उस पृष्ठभूमि में आया है जब असम में बेदखली अभियानों पर जमीयत और भाजपा सरकार आमने-सामने हैं। पिछले कुछ महीनों में गोलपाड़ा, धुबरी और नलबाड़ी जिलों में हजारों परिवारों को बेदखल



किया गया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक लगभग 8,000 से ज्यादा परिवार प्रभावित हुए हैं। जमीयत का दावा है कि 50,000 से ज्यादा लोग बेघर हो गए। जमीयत ने राष्ट्रपति और उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तक को पत्र लिखकर इस अभियान को रोकने की मांग की है। यहाँ तक कि जमीयत ने प्रभावित परिवारों के लिए अस्थायी आश्रय भी लगाए और राहत सामग्री भी बांटी।

असम सरकार का तर्क है कि ये अभियान अवैध कब्जों को हटाने और मूल निवासियों के अधिकार सुरक्षित करने के लिए हैं। मुख्यमंत्री सरमा का कहना है कि बांग्लादेश से आए अवैध घुसपैठिये जमीन पर कब्जा कर रहे हैं और असम की अस्मिता के लिए यह खतरा है। यही कारण है कि वे इसे किसी भी कीमत पर रोकने के पक्ष में नहीं हैं। जमीयत और सरमा सरकार की यह भिड़ंत केवल बेदखली तक सीमित नहीं रही।

अरशद मदनी ने जब बेदखली अभियानों की तुलना गााज से की, तो भाजपा ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी तक की मांग कर डाली। भाजपा का कहना था कि इस तरह का बयान असमिया जनता की भावनाओं को आहत करता है। सरमा ने भी मदनी और उनके गुटों को ‘irrelevant’ करार देते हुए कहा कि

असम की राजनीति इन्हीं पुराने मजहबी संगठनों की दया पर नहीं चल सकती। यही नहीं, असम की जमीन और पहचान पर हाल में कई विवादास्पद बयान आए। महिला अधिकार कार्यकर्ता और पूर्व योजना आयोग सदस्य सैयदा हमीद ने कहा कि ‘सारी जमीन अल्लाह की है।+ इस पर सरमा ने कड़ी प्रतिक्रिया जताई और इसे राष्ट्रविरोधी मानसिकता बताया। उन्होंने कहा कि यह अवैध प्रवासियों को वैध ठहराने की कोशिश है। उधर, ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (आसू) ने भी अवैध प्रवास और सीएए-

विरोधी साहित्य की एक अद्भुत और कालजयी रचना है । मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी ने श्रीकृष्ण सरल जी के नाम पर कविता के लिए प्रति वर्ष+श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार+ आरंभ किया है। उन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा ‘भारत गौरव’ , ‘राष्ट्र कवि’ , ‘क्रांति-कवि’ , ‘क्रांति-रत्न’ , ‘अभिनव-भूषण’ ,

असम जैसे संवेदनशील राज्य में, जहां अवैध प्रवास, नागरिकता और भूमि का मुद्दा दशकों से राजनीति का केंद्र रहा है, वहां कांग्रेस का यह कर्मजोर पड़ता रुख बता रहा है कि आज यहां जो इस तरह की समस्याएँ हैं, इन सभी का जिम्मेदार यदि कोई है तो वह कांग्रेस ही है। फिलहाल तो यही समझ आ रहा है कि अरशद मदनी के ‘लेटर बम’ ने कांग्रेस की असल सच्चाई सामने लाकर रख दी है। बहुसंख्यक हिन्दू समाज के दम पर सत्ता में आने वाली कांग्रेस का दिल मुसलमानों के लिए धड़कता है, कहना होगा कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए कहीं से भी यह अच्छी स्थिति नहीं है।

असम जैसे संवेदनशील राज्य में, जहां अवैध प्रवास, नागरिकता और भूमि का मुद्दा दशकों से राजनीति का केंद्र रहा है, वहां कांग्रेस का यह कर्मजोर पड़ता रुख बता रहा है कि आज यहां जो इस तरह की समस्याएँ हैं, इन सभी का जिम्मेदार यदि कोई है तो वह कांग्रेस ही है। फिलहाल तो यही समझ आ रहा है कि अरशद मदनी के ‘लेटर बम’ ने कांग्रेस की असल सच्चाई सामने लाकर रख दी है। बहुसंख्यक हिन्दू समाज के दम पर सत्ता में आने वाली कांग्रेस का दिल मुसलमानों के लिए धड़कता है, कहना होगा कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए कहीं से भी यह अच्छी स्थिति नहीं है।

अरशद मदनी ने यह बयान किसी सामान्य मौके पर नहीं, बल्कि एक सभा में दिया। उनका यह दावा केवल अतीत का किस्सा नहीं बल्कि वर्तमान की राजनीति पर भी तीखा प्रहार है। भाजपा ने इसे हाथोंहाथ लिया और कांग्रेस

पर एक बार फिर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाया है। वहीं, असम के मुख्यमंत्री हिमंता

बिस्वा सरमाने इस बयान का जवाब उसी तेवर में दिया, जिसके लिए वे जाने जाते हैं। उन्होंने कहा

कि राहुल गांधी पहले ही उन्हें धमकी दे चुके थे और अब मदनी ने चेतावनी दी है। जितनी ज्यादा

धमकी दोगे, उतना ही ज्यादा असम के लोग उठ खड़े होंगे और

मुकाबला करेंगे।'

डॉ. मर्याद वतुर्वेदी

असम की राजनीति में अचानक एक ‘लेटर बम’ फूटा है। जमीयत-उलेमा-ए-हिंद (ए) के प्रमुख अरशद मदनी ने दावा किया कि उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को एक चिट्ठी लिखी थी। उस चिट्ठी में उन्होंने साफ आग्रह किया था कि हिमंता बिस्वा सरमा को कांग्रेस से टिकट न दिया जाए, क्योंकि वे ‘आरएसएस मानसिकता वाले+ हैं और असम में आग लगाने का काम कर सकते हैं। वस्तुतः अब इस बयान को सुनते ही राजनीति गरमा उठी है। दरअसल, मदनी के इस कथन ने सीधे-सीधे कांग्रेस की टिकट वितरण प्रक्रिया पर सवाल खड़ा कर दिया। क्या कांग्रेस जैसे राष्ट्रीय दल का टिकट इस तरह धार्मिक संगठनों या मौलवियों की सिफारिशों पर निर्भर करता है? और अगर ऐसा है तो कांग्रेस में मेहनत कर रहे हिंदू कार्यकर्ताओं की स्थिति क्या होगी? ये प्रश्न अचानक पूरे देश की बहस का हिस्सा बन गया है।

अरशद मदनी ने यह बयान किसी सामान्य मौके पर नहीं, बल्कि एक सभा में दिया। उनका यह दावा केवल अतीत का किस्सा नहीं बल्कि वर्तमान की राजनीति पर भी तीखा प्रहार है। भाजपा ने इसे हाथोंहाथ लिया और कांग्रेस पर एक बार फिर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाया है। वहीं, असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने इस बयान का जवाब उसी तेवर में दिया, जिसके लिए वे जाने जाते हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी पहले ही उन्हें धमकी दे चुके थे और अब मदनी ने चेतावनी दी है। +जितनी ज्यादा धमकी दोगे, उतना ही ज्यादा असम के लोग उठ खड़े होंगे और मुकाबला करेंगे।+ सरमा ने साफ कहा कि अवैध रूप से बसे लोगों को बेदखल करना जारी रखेंगे और मूल निवासियों के भूमि अधिकार सुरक्षित करेंगे। उन्होंने मदनी और राहुल गांधी दोनों को असम के लोगों से लड़ने की चुनौती दी और ऐलान किया कि ‘हम उन्हें हरा

मूंगवाल के 50 बच्चों का बनाया गया जन्म प्रमाण पत्र, बच्चों के अभिभावकों को बड़ी राहत

कोंडगांव। जिला प्रशासन की पहल से कोंडगांव विकासखंड के ग्राम पदनार और मुंगवाल के 50 बच्चों को जन्म प्रमाण पत्र जारी किए गए हैं। कलेक्टर नूपुर राशि पन्ना के मार्गदर्शन में जिला योजना एवं सांख्यिकी अधिकारी ने गांव में पहुंचकर बच्चों के यह प्रमाण पत्र वितरित किया। जन्म प्रमाण पत्र बनने से बच्चों के अभिभावकों को बड़ी राहत मिली है। अब तक प्रमाण पत्र न होने के कारण वे शासकीय योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित थे। प्रशासनिक प्रयासों के बाद अब बच्चों को शिक्षा, छात्रवृत्ति और अन्य सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। ज्ञात हो कि जनदर्शन में ग्राम द्वारा तहसीलदार मदीपाल एवं जिला रजिस्ट्रार (जन्म मृत्यु) को सभी बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र जल्द से जल्द बनाने के निर्देश दिए थे। तहसीलदार एवं जिला रजिस्ट्रार (जन्म मृत्यु) के संयुक्त तत्वाधान में त्वरित कार्यवाही करते



हुए सभी 50 बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र प्राथमिक शाला मूंगवाल में वितरित किया गया। ग्रामीणों ने इसके लिए शासन प्रशासन के प्रति आभार जताया।

जन्म या मृत्यु पंजीयन कैसे करवायें?

जिला योजना एवं सांख्यिकी अधिकारी से प्राप्त जानकारी अनुसार जन्म प्रमाण पत्र जन्म एवं मृत्यु के 21 दिवस के भीतर निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। शासकीय अस्पताल में प्रसव होने पर डिस्चार्ज के पूर्व जन्म प्रमाण पत्र उसी संस्थान से प्राप्त करें। शासकीय अस्पताल में मृत्यु होने पर प्रमाण पत्र उसी संस्थान से प्राप्त

करें। निजी अस्पताल, घर, अन्य स्थान में जन्म, मृत्यु होने पर पंजीयन हेतु संबंधित नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायत, ग्राम पंचायत में सूचित करें। शिशु के नाम के बिना भी जन्म पंजीयन कराया जा सकता है। जन्म पंजीयन की तारीख से 12 मास के भीतर शिशु का नाम निःशुल्क जोड़ा जावेगा। जन्म, मृत्यु पंजीयन करने के पश्चात प्रमाण पत्र लेना न भूले। जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र कानूनी पहचान एवं सरकारी सुविधाओं का लाभ लेने हेतु महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। प्रमाण पत्र में नाम तथा तिथि सावधानीपूर्वक दर्ज कराएं जिससे बाद में किसी प्रकार की असुविधा से बचा जा सके।

शिक्षा, खेल, कला और समाज सेवा में शिक्षक शिवचरण साहू बने प्रेरणास्रोत

कोण्डागांव। कोण्डागांव जिला के शासकीय उच्च प्राथमिक शाला मड़नार के समर्पित शिक्षक शिवचरण साहू शिक्षा, खेल, कला और समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी बहुमुखी प्रतिभा से बच्चों और समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। जुलाई 2007 में शिक्षाकर्मी वर्ग-03 के रूप में नियुक्त होकर वर्तमान में शिक्षक (एलबी) पद पर कार्यरत साहू न केवल शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार ला रहे हैं बल्कि सामुदायिक सहयोग से विद्यालय और बच्चों के सर्वांगीण विकास में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। शिवचरण साहू के प्रयासों से विद्यालय को 2020 में जिला प्रशासन द्वारा उत्कृष्ट विद्यालय सम्मान और 2022 में डाईट बस्तर द्वारा एक्सिलेंसी अवार्ड प्राप्त हुआ। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने 2018 से 2022 तक अवकाश के दिनों में मार्शल आर्ट प्रशिक्षण शिविर लगाकर 500 से अधिक छात्राओं को आत्मरक्षा में दक्ष बनाया। उनके मार्गदर्शन में विद्यालय के बच्चों ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में 204 बार उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वहीं राष्ट्रीय स्तर पर भी विद्यालय से अब तक 15 खिलाड़ी चयनित होकर जिले



और प्रदेश का नाम रोशन कर चुके हैं। साहू स्वयं काष्ठ शिल्पकार और चित्रकार हैं। उनके निर्देशन में विद्यार्थी शिल्पकला और चित्रकारी में दक्ष होकर प्रतिवर्ष लगभग तीन लाख रुपये तक का आर्थिक उपार्जन कर रहे हैं। विद्यालय को अखिल भारतीय सतनामी समाज और राष्ट्रीय जनजातीय साहित्य एवं लोककला महोत्सव में उत्कृष्ट कला प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया है। समाज सेवा के क्षेत्र में भी साहू अग्रणी हैं। उन्होंने अब तक 53 बार निःशुल्क रक्तदान किया है और 2018 में मरणोपरान्त देहदान की घोषणा की, जिसके लिए उन्हें विभिन्न संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया।

सम्मान और अलंकरण
शिवचरण साहू को मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण 2021, छत्तीसगढ़ गौरव अलंकरण 2018, अक्षय गौरव 2019, तुलसी मानस अलंकरण 2024, योगाचार्य सम्मान 2017 सहित अनेक राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय सम्मानों से नवाजा गया है। साहू का संकल्प है कि सामुदायिक सहभागिता से बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय में संस्कारिक एवं व्यवसायिक शिक्षा केन्द्र और समाज उत्थान केन्द्र की स्थापना की जाए।

लक्ष्मणपुर कैम्प किरन्दुल में धूमधाम से मनाया जा रहा है गणेशोत्सव



किरंदुल। किरन्दुल नगर के वाई क्रमांक 01 लक्ष्मणपुर कैम्प पंञ्चाल में गणेशोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। पंञ्चाल में भगवान गणेश जी की आकर्षक प्रतिमा विराजित की गई है तथा नव युवा समिति द्वारा इस वर्ष 38 वां गणेशोत्सव मनाया जा रहा है। इस दौरान 11

दिनों तक बड़े हर्षोल्लास व विधि विधान के साथ पूजा पाठ एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं आयोजित की जा रहें हैं। साथ ही नगरवासियों के सुख शांति व स्वास्थ्य की मंगल कामना के साथ भगवान गणेश जी की विधि विधान से विशेष पूजा अर्चना एवं आरती की गई।

यूरिया की कालाबाजारी पर कृषि विभाग ने की बड़ी कार्यवाही गोदाम सील

कांकेर। जिले में कृषि आदान विक्रय की कालाबाजारी को रोकने के लिए उपसंचालक कृषि जितेन्द्र सिंह कोमरा के नेतृत्व में जांच टीम गठित की गई है तथा कालाबाजारी की शिकायत पर लगातार कार्यवाही किया जा रहा है। कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार भानुप्रतापपुर विकासखण्ड के ग्राम भानबेड़ा क्षेत्र के किसानों से मेसर्स पटेल कृषि केंद्र भानबेड़ा के संचालक व प्रोपराइटर द्वारा यूरिया की किस्मत का नाजायज फायदा उठाते हुए महंगे दाम पर तथा बिना पॉस मशीन के तीन से चार गुना कीमत पर यूरिया खाद बेचने की शिकायत प्राप्त हुई थी। शिकायत प्राप्त होते ही जांच टीम के सदस्यों खाद एवं उर्वरक निरीक्षक अमिनेश गावड़े, ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी कुलदीप साहू, किरण भंडारी, प्रवीण कवाची द्वारा कृषि केंद्रों के

गोदाम में आकस्मिक निरीक्षण किया गया तथा यूरिया खाद की बिक्री के बारे में मौके पर मौजूद किसानों से पूछताछ कर छानबीन की गई। किसानों ने बताया कि व्यापारी के द्वारा एक बोरी यूरिया खाद एक हजार के दर से बिक्री किया जा रहा है। मौके पर कृषि सेवा केंद्र के संचालक पंकज पटेल को बुलाया गया तो उन्होंने भानबेड़ा से बाहर होने की जानकारी दी तथा कुछ देर बाद फोन से पुनः संपर्क करने पर कृषि सेवा केन्द्र के संचालक का मोबाईल स्विच ऑफ बताया गया। संचालक के कृषि सेवा केन्द्र नहीं पहुंचने पर निरीक्षण टीम द्वारा ग्राम पंचायत सरपंच ममता ठाकुर, उपसरपंच खेमलाल साहू, ग्राम पटेल दुर्गोधन नरेटी एवं नाराज किसानों की उपस्थिति में आगामी आदेश तक व्यापारी का गोदाम सील किया गया।

कृषि अधिकारियों ने दी कड़ी

कार्यवाही की चेतावनी-कृषि अधिकारियों ने कड़ी कार्यवाही करने की चेतावनी देते हुए कहा कि सरकार द्वारा उर्वरकों की एक निर्धारित कीमत तय की गई है, जिसका पालन करना सभी विक्रेताओं के लिए अनिवार्य है। कालाबाजारी बर्दास्त नहीं की जाएगी। अधिक दर पर खाद बेचने वाले दुकानदार किसानों के अधिकारों का हनन करते हैं, जो किसानों को आर्थिक रूप से कमजोर करता है, इससे उनकी खेती और आय दोनों प्रभावित होती है। सरकार किसानों को उचित मूल्य पर खाद उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। कृषि विभाग के अधिकारियों ने कहा कि अधिक दर पर उर्वरक खाद विक्रय की जानकारी मिलने पर कृषि विभाग को सूचित करें ताकि दोषियों के खिलाफ नियमानुसार कड़ी कार्रवाई किया जा सके।

मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के द्वारा हरी झंडी दिखाकर नेशनल लोक अदालत के प्रचार-प्रसार को सफल बनाने हेतु न्याय को किया रवाना



कोण्डागांव। छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण बिलासपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोण्डागांव किरण चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कोण्डागांव रेश्मा बैरागी पटेल के द्वारा न्यायस्थ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस न्यायस्थ से प्रचार-प्रसार करने का मुख्य उद्देश्य 13 सितम्बर को आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालत में आम जनता को सरल, सुलभ, सस्ता और त्वरित न्याय दिलाना तथा आपसी सुलह समझौते के माध्यम से विवादों का निपटारा

करना रहा। न्यायस्थ के माध्यम से जिला कोण्डागांव शहर के विभिन्न नगरों एवं वाडों में मुनादी करकर लोक अदालत प्रक्रिया, उसके लाभ एवं उसमें निःशुल्क त्वरित एवं आपसी सहमति से विवादों के समाधान की सुविधा के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही आगामी नेशनल लोक अदालत के सफल आयोजन एवं अधिकतम जनमागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोण्डागांव के द्वारा मुनियारी के माध्यम से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में जाकर लोगों को लोक अदालत प्रक्रिया, उसके लाभ एवं

उसमें निःशुल्क त्वरित एवं आपसी सहमति से विवादों के समाधान की सुविधा के बारे में जानकारी दी गई। प्रचार रथ, ध्वनि विस्तारक यंत्र (लाउडस्पीकर) और पापलेट वितरण के माध्यम से आमजनों को बताया गया कि वे अपने लंबित प्रकरण जैसे कि चेक बाउंस मोटर दुर्घटना स्था बिजली बिल बैंक ऋण, पारिवारिक विवाद यातायात चालान मजदुरी वाद भूमि विवाद आदि का समाधान लोक अदालत के माध्यम से करवाये जाने हेतु लोगों को प्रेरित किया गया। यह प्रचार-प्रसार सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गायत्री साय के तत्वाधान में सफल हुआ।

नगरपालिका के आठ कॉम्प्लेक्स की हुई नीलामी



कोण्डागांव। शासन के निर्देशानुसार निकाय को अपनी आय बढ़ाने के उद्देश्य से नगर पालिका परिषद कोंडगांव में परिषद मद से मटन मार्केट में आठ कॉम्प्लेक्स बनाया गया है, जिसकी नीलामी नगर पालिका में रखी गयी। नीलामी में 36 बोलीदारों ने भाग लिया और आठ दुकान की नीलामी की गई। जिसमें नगर पालिका को 50 लाख रुपये की आय प्राप्त हुई। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष नरपति पटेल, उपाध्यक्ष जसकेतु उम्रेपड़ी, पार्षद संतोष पात्र, हर्ष डिल्हन, सुषमा, सोनमणि, ललित देवांगन, सोनसिंह तथा सीएमओ दिनेश डे एवं अधिकारी कर्मचारी सहित नगरवासी भी उपस्थित रहे।

यात्रियों की सुरक्षा पर प्रशासन की सख्त कार्यवाही, यात्री बसों की हुई कड़ी जाँच, 12 हजार का जुर्माना

सुकमा। यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए जिला प्रशासन ने बस संचालकों पर सख्त रुख अपनाया है। कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव के निर्देशानुसार जिला परिवहन अधिकारी एस.बी. रावटे के नेतृत्व में जिला मुख्यालय सुकमा में यात्री बसों की व्यापक जाँच की गई। जाँच के दौरान बसों के फिटनेस, रेट लिस्ट, परमिट, फर्स्ट एड किट और बीमा संबंधी दस्तावेजों की बारीकी से पड़ताल की गई। इस दौरान एक यात्री बस में अनियमितताएँ पाई गईं, जिस पर नियमानुसार जुर्माना लगाकर सुधार के निर्देश दिए गए। सभी प्रकरणों को मिलाकर कुल 12 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया। जिला परिवहन अधिकारी रावटे ने बताया कि प्रशासन की यह मुहिम निरंतर जारी रहेगी। यदि यात्रियों द्वारा किसी भी प्रकार की शिकायत प्राप्त होती है, तो तत्काल जाँच कर सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस कार्रवाई से स्पष्ट है कि जिला प्रशासन यात्रियों की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करेगा। लापरवाह बस संचालकों के खिलाफ लगातार सख्ती बरती जाएगी ताकि आमजन को सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा उपलब्ध हो सके।

जिला पंचायत सीईओ ने प्रदाय किया सेवानिवृत्त शासकीय सेवकों को पेंशन प्राधिकार पत्र

नारायणपुर। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत आकांक्षा शिक्षा खलखो जिला पंचायत कार्यालय में जिले के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मानित करते हुए पेंशन प्राधिकार पत्र प्रदाय किया और पेंशन राशि को अपने जीवन में सदुपयोग करने की सलाह दी। सीईओ ने शिक्षा विभाग से प्रधान पाठक मन्हेर सिंह नुरेटी एवं प्रधान पाठिका भानुमति नायक को 31 आगस्त 2025 को सेवानिवृत्त होने पर शाल एवं श्रीफल भेंट करते हुए पीपीओ प्रदाय किया। इस अवसर पर सीईओ ने सेवानिवृत्त हुए सभी कर्मचारियों को स्वास्थ्य एवं सुखमय जीवन की कामना करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जिला कोषालय अधिकारी हरीश साहू एवं अन्य विभागीय कर्मचारी उपस्थित थे।

एनएचएम कर्मचारियों का आक्रोश: सामूहिक इस्तीफे के साथ हड़ताल तेज, कोण्डागांव में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित

कोण्डागांव। जिला मुख्यालय कोण्डागांव में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के संचिदा स्वास्थ्य कर्मियों की हड़ताल और तेज हो गई। हड़तालरत कर्मचारियों ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) कार्यालय कोण्डागांव पहुंचकर सामूहिक इस्तीफा सौंपा। इस दौरान कर्मचारियों ने सरकार पर वादखिलाफी और दमनकारी रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए आंदोलन को और अग्र करने की चेतावनी दी। एनएचएम जिलाध्यक्ष कृष्णा पटेल ने जानकारी देते हुए बताया कि, एनएचएम कर्मचारी अपनी 10 सूत्रीय मांगों को लेकर 18 अगस्त से लगातार आंदोलनरत हैं। उनका आगे कहना है कि बीते कई वर्षों से नियमितीकरण की मांग की जा रही है, लेकिन सरकार ने अब तक कोई इस निर्णय नहीं लिया। आंदोलन के दौरान



भी चेतावनी पत्रों और जापनों के बावजूद प्रशासन की ओर से सकारात्मक पहल नहीं की गई, बल्कि उल्टा कर्मचारियों पर दबाव बनाने के लिए निलंबन और बर्खास्तगी जैसी कार्रवाई शुरू कर दी गई है। संघ के पदाधिकारियों ने सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि, यदि प्रारंभिक स्तर पर ही मांगों का समाधान कर दिया

गया होता, तो हालात इतने गंभीर न होते। उन्होंने मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप कर इलाज और स्वास्थ्य सुविधाओं के वहाँ कोण्डागांव में जिला कार्यकारिणी ने सामूहिक इस्तीफा देकर विरोध दर्ज कराया और कहा कि यदि सरकार ने शीघ्र समाधान नहीं किया तो आंदोलन और अग्र होगा। एनएचएम कर्मचारियों के सामूहिक इस्तीफे से जिले की

स्वास्थ्य सेवाओं पर सीधा असर पड़ना शुरू हो गया है। आमजनों को इलाज और स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। फिलहाल प्रशासन स्थिति पर नजर बनाए हुए है, लेकिन कर्मचारियों का कहना है कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होतीं, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

जिला स्तरीय वाद विवाद प्रतियोगिता संपन्न



कोण्डागांव। जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं कलेक्टर नूपुर राशि पन्ना के मार्गदर्शन में जिला कार्यालय के सभा कक्ष में सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा विषय पर जिला स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित किया गया। प्रतियोगिता में जिले के सभी विकासखंडों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और सड़क सुरक्षा को लेकर अपने विचार प्रभावशाली ढंग से



प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक वाय अक्षय कुमार मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान विकासखंड माकड़ी सेजेस, द्वितीय स्थान फरसगांव विकासखंड आदर्श विद्यालय एवं तृतीय स्थान माकड़ी विकासखण्ड हीरापुर ने प्राप्त किया। विजेता टीमों को क्रमशः 7000, 5000 और 3000 रुपये का नगद पुरस्कार दिए जाने की

अधिकारी भारती प्रधान, यातायात प्रभारी मुकेश जोशी डिट्टी कलेक्टर किशोर शर्मा लखेश्वर यादव लोकपाल ऋषभ जैन प्राचार्य रीबा जॉन जिला परियोजना अधिकारी वेणुगोपाल राव, शिक्षा विभाग के अधिकारी कर्मचारी एवं, यातायात विभाग, निर्णायकगण, शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

मालवीय नगर नाले में हुए बड़ी पाइप लाइन लिकेज सुधार कार्य व फिल्टर प्लांट में किए जा रहे संयंत्र सफाई कार्य का महापौर ने किया निरीक्षण, देर रात चला मरम्मत कार्य

दुर्गा। मालवीय नगर यामाहा शो-रूम के सामने शक्ति नगर शंकर नगर सहित अन्य प्रमुख टंकियों को भरने वाली मुख्य पाइप लाइन जो कि बड़ी लिकेज होने के कारण पानी आपूर्ति में बाधक हो रही थी उनके सुधार करने आज नगर निगम के जल गृह विभाग द्वारा शट डाउन लेकर व्यापक तौर पर मरम्मत कार्य कराया गया जो देर रात चला साथ ही 24 एमएलडी फिल्टर प्लांट के रॉ वाटर स्टोरेज संयंत्र में भी जमे गाद व कचरे को भी सफाई किया गया साथ ही आज बोर्से टंकी में फूटे सपलाई पाईप लाईन का भी सुधार कार्य किया गया। मालवीय नगर में चल रहे मरम्मत कार्य व फिल्टर प्लांट में सफाई कार्य का निरीक्षण करने महापौर अल्का बाघमार स्वयं मौके पर पहुंची और अधिकारियों को शहर में पानी सपलाई नार्मल करने हर आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए इस दौरान - जलगृह विभाग प्रभारी लीना दिनेश देवांगन, वित्त विभाग और प्रभारी नरेंद्र बंजारे, लोककर्म विभाग प्रभारी देवनारायण चंद्राकर, स्वास्थ्य विभाग



प्रभारी नीलेश अग्रवाल, पार्षद सावित्री दमाहे उप अभियंता विनोद मांडवी, जल कार्य निरीक्षक नारायण ठाकुर आदि उपस्थित रहे। ज्ञात हो कि पिछले कुछ समय से मालवीय नगर शंकर नाला से होकर शक्ति नगर, हनुमान नगर शनिचरी बाजार, शंकर नगर गिरधारी नगर ट्रांसपोर्ट नगर जैसे कई बड़ी टंकियों को भरने 24 एमएलडी

फिल्टर प्लांट से 6 सौ एएमए डबा का मुख्य पाईप लाईन बिक्री है जो की मालवीय नगर शंकर नाला में फूट गया था जिसके कारण उक्त टंकियों में क्षमता से तथा समय पर पानी नहीं भर पा रहा था इसका असर पदमनाभपुर जैसे अन्य टंकियों में भी पड़ता था। चूंकि बारिश के चलते यह कार्य नहीं हो पा रहा था और इस वजह से पानी

की आपूर्ति में आए दिन शिकायत आ रही थी इसलिए आज मौसम अनुकूल होते ही पूरी तैयारी के साथ जल विभाग के जानकार कर्मचारियों द्वारा रिपेयर कार्य चलाया गया साथ ही रायपुर नाका स्थित प्लांट में नदी इंटरकेवल से आने वाले रॉ वाटर गाद व कचरा जमा हो गया था उनका भी सफाई कराया गया इसके अलावा



बोर्से टंकी के सपलाई लाइन जो की प्रदूषित नगर में कई जगह लीकेंज था उनका भी रिपेयर किया गया। महापौर अल्का बाघमार ने अधिकारियों को निर्देश दिया है की शहर के अन्य क्षेत्र में जहां पाईप लाईन लिकेज है। उन सभी का प्राथमिकता से सुधार कार्य चलाकर सुचारु रूप से पानी सपलाई किया जाए।

निगम से चिह्नित तालाबों में ही करें गणेश विसर्जन

- प्रतिबधित तालाबों में विसर्जन करने पर होगी कार्रवाई
- निगम आयुक्त ने तालाबों में कुंड बनाने दिए निर्देश
- प्रतिमा विसर्जन के बाद तालाबों की करें सफाई



भिलाई। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा मूर्तियों के विसर्जन से जल स्रोतों की गुणवत्ता पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों की रोकथाम के लिए गाईड लाइन जारी किया गया है। नगर निगम भिलाई अंतर्गत समितियों द्वारा प्रमुख चौक-चौराहों, गली, मोहल्ले एवं घरों में भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित की गई है। आगामी कुछ दिनों बाद दुर्गाव्रत पर्व आने वाला है। सभी समितियों द्वारा तालाबों में मूर्तियां विसर्जित किया जाता है, जिसके कारण तालाबों का जल प्रदूषित होता है। तालाबों में जीव-जन्तु रहते हैं, जल प्रदूषण से उनकी मृत्यु हो जाती है। साथ ही तालाबों में पूजा सामग्री डालने से कचरा फैलता है। इसके लिए नगर निगम द्वारा कुछ तालाबों में मूर्ति विसर्जन के लिए कुण्ड बनाया

जा रहा है। जितने भी श्रद्धालु हैं, वे निगम द्वारा बनाए गए कुण्ड में ही मूर्ति विसर्जन करें। मूर्ति विसर्जन के लिए चिन्हांकित किए गए तालाबों में आलाबंद तालाब खम्हरिया, स्मृति नगर तालाब, आमा तालाब, लिम्हा तालाब, भेलवा तालाब, रामनगर मुक्तिधाम तालाब, नकटा तालाब, श्याम नगर केम्प-2 तालाब एवं जयंतो

चंद्रा मौर्या टॉकीज के समीप बनेगा मार्केट जोन

- अद्वैत कच्छे ने दुकानें संचालित कर रहे लोग
- निगम आयुक्त ने अधिकारियों के साथ किया निरीक्षण
- दीवारों में विपएक गए पोस्टरों को निकालने कक्ष



भिलाई। नगर पालिक निगम भिलाई जोन क्रं. 3 मधुर टेरेसा नगर अंतर्गत चंद्रा मोर्या अंडरब्रिज, मार्केट जोन, ओवरब्रिज एवं सेक्टर 2 छठ तालाब का निरीक्षण निगम आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया। निगम आयुक्त ने चंद्रा मोर्या अंडरब्रिज में बरसाती पानी का भराव को देखा फिलहाल ब्रिज पूरी तरह खाली था। ब्रिज के नीचे 1 फीट ऊपर करने के लिए चर्चा की गई जिससे जल भराव की समस्या न हो। अंडर ब्रिज के नीचे पेंटिंग कार्य का अवलोकन आयुक्त ने किया और शेष ब्रिज स्थलों में संदेश पूर्ण पेंटिंग करने निर्देशित किया है। समीपस्थ मोर्या टॉकिज

के सामने रिक्त स्थल पर मार्केट जोन बनाने उपस्थित अभियंता को निर्देशित किए। नेशनल हाईवे में बने ओवरब्रिज के दिवारों एवं पिल्लरों में स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता लाने पेंटिंग बनाया गया है, जिसका निरीक्षण कर दिवारों पर चिपकाए गए पोस्टर को हटाने निर्देशित किया गया है। आयुक्त ने सेक्टर 2 छठ तालाब का अवलोकन कर मूर्ति विसर्जन के लिए प्रतिबंधित एवं

उद्यान सुधार करने निर्देशित किया। संत करतार सिंह उद्यान का निरीक्षण करते हुए आवश्यक संधारण कार्य करने उद्यान अधिकारी तिलेश्वर साहू को निर्देशित किया हैं। निरीक्षण के दौरान कार्यपालन अभियंता संजय अग्रवाल, सहायक अभियंता नितेश मेथ्राम, सहायक राजस्व अधिकारी बसंत देवांगन, जोन स्वास्थ्य अधिकारी बोरेंद्र बंजारे उपस्थित रहे।

आयुक्त ने मूर्ति विसर्जन के लिए तालाबों में कुण्ड बनाने के दिए निर्देश



भिलाई। नगर पालिक निगम भिलाई जोन क्रमांक 04 शिवाजी नगर अंतर्गत मूर्ति विसर्जन हेतु प्रतिबंधित तालाबों एवं उद्यान का निरीक्षण करने आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय वार्ड पार्षद के साथ पहुंचे। निगम आयुक्त ने वार्ड क्र. 50 बाबा बालकनाथ तालाब का निरीक्षण किया, समीपस्थ बाबा बालक नाथ उद्यान का अवलोकन भी किया गया। वार्ड क्र. 43 बापू नगर तालाब का अवलोकन कर आवश्यक सुधार हेतु निर्देशित किया गया है। तालाब में रेलिंग, गेट एवं पथवे सहित आवश्यक सुधार करने निर्देशित किया गया है। वार्ड क्र. 40

मुक्तिधाम में मूर्ति विसर्जन हेतु तालाब का निरीक्षण कर मूर्ति विसर्जन हेतु चिन्हांकित तालाबों में कुण्ड बनाने निर्देशित किया गया है। वार्ड क्र. 50 में उद्यान का निरीक्षण कर वृक्षारोपण करने निर्देशित किया गया। निरीक्षण के दौरान जोन आयुक्त अमरनाथ दुबे, कार्यपालन अभियंता रवि सिन्हा, सहायक अभियंता प्रिया करसे, उप अभियंता चंद्रकांत साहू, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, सहायक कार्यस्व अधिकारी बालकृष्ण नायडू, जोन स्वास्थ्य अधिकारी हेमंत मांडवी, सहायक उद्यान अधिकारी संजय शर्मा उपस्थित रहे।

भिलाई में श्रीराम कथा भूमि पूजन सम्पन्न जीवन आनंद फाउंडेशन का भव्य आयोजन

भिलाई। जीवन आनंद फाउंडेशन द्वारा 12 से 20 सितंबर तक आयोजित होने वाली श्रीराम कथा का भूमि पूजन समारोह मंगलवार को भक्तिमय माहौल में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य लोगों, श्रद्धालुओं और रामभक्तों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम में भिलाई ट्रक ट्रेलर ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं युवा समाजसेवी इंद्रजीत सिंह 'छोटू' की उपस्थिति विशेष आकर्षण का केंद्र रही। उनकी सक्रिय भागीदारी और विनम्र व्यवहार ने श्रद्धालुओं का दिल जीत लिया। समाजसेवा और युवाओं के लिए प्रेरणा के रूप में जाने वाले इंद्रजीत सिंह ने कहा - श्रीराम कथा समाज को जोड़ने और जीवन मूल्यों को संवारने का माध्यम है। ऐसे आयोजनों से नई ऊर्जा और सद्भाव का संचार होता है। अतिथियों ने बड़ाई आयोजन की शुभा-भूमि पूजन में श्रीराम कथा के मुख्य आयोजक और जीवन आनंद फाउंडेशन से जुड़े विनोद सिंह, वैशाली नगर क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक रिकेश सेन सहित



कई प्रतिष्ठित नामरिक्त उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर भूमि पूजन कर श्रीराम कथा के सफल आयोजन की मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। **भक्ति से सराबोर हुआ वातावरण-** भूमि पूजन के दौरान वैदिक मंत्रोच्चारण और धार्मिक अनुष्ठानों की ध्वनि से पूरा संचालन नहीं, बल्कि समाज में धर्म, कर्तव्य, नैतिक मूल्यों और सदाचार की स्थापना का सशक्त माध्यम है। जीवन आनंद फाउंडेशन को शुभकामनाएं--अंत में, श्रद्धालुओं और अतिथियों ने जीवन आनंद फाउंडेशन की टीम को इस पुनीत प्रयास के लिए बधाई दी। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने एक स्वर से कहा -राम नाम का स्मरण हो कल्याण का पथ है।

श्रीराम कथा 12 से 20 सितंबर तक प्रतिदिन आयोजित होगी। आयोजकों का कहना है कि यह कथा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि समाज में धर्म, कर्तव्य, नैतिक मूल्यों और सदाचार की स्थापना का सशक्त माध्यम है। जीवन आनंद फाउंडेशन को शुभकामनाएं--अंत में, श्रद्धालुओं और अतिथियों ने जीवन आनंद फाउंडेशन की टीम को इस पुनीत प्रयास के लिए बधाई दी। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने एक स्वर से कहा -राम नाम का स्मरण हो कल्याण का पथ है।

आयुष्मान कार्ड सहित गैर विभागीय कार्यों से अलग रखने पंचायत सचिवों ने दिया ज्ञापन

दुर्गा। पंचायत सचिव संघ जिला दुर्गा के बैठक में सर्व सम्मति से निर्णय लिया है कि ग्राम पंचायत सचिवों को आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मौखिक रूप से अत्यधिक दबाव डाला जा रहा है, वर्तमान में पंचायत सचिवों के पास विभागीय कार्यों का दबाव ही बहुत ज्यादा है, ग्राम पंचायत के नियमित कार्य जैसे लेखा संधारण, 16 पंजीयों का अद्यतन कार्य, पंचायत मीटिंग, ग्राम सभा मीटिंग, विभिन्न समितियों की मीटिंग, जन्म मृत्यु पंजीयन, विवाह पंजीयन, विभागीय ऑडिट, ऑडिट, लोकल फंड ऑडिट, विभागीय जांच निरीक्षण, पंचायत पुरस्कार स्वच्छता संबंधी कार्य, विभिन्न ऑनलाइन कार्य, सूचना के अधिकार की जानकारी, 15वें वित्त के जियो टैग, ग्राम की व्यवस्थाएं एवं समस्याओं के निराकरण, जनपद के निर्देशित सभी आवश्यक कार्य एवं जानकारीएं किए जाते हैं, इन सभी कार्यों को ग्राम पंचायत के एकमात्र कर्मचारी पंचायत



सचिव के द्वारा किया जाता है, क्योंकि यह सभी हमारे विभागीय कार्य हैं इस कारण इन कार्यों में पिछड़ने से हमारा विभाग अत्यधिक प्रभावित होता है जिसके कारण माननीय कलेक्टर, जिला सीईओ व दुर्गा धमधा पाटन के सीईओ को ज्ञापन देकर अन्य विभाग के कार्यों से दूर रखने के लिए ज्ञापन दिए हैं उक्त अवसर पर पंचायत सचिव संघ के जिलाध्यक्ष महेन्द्र कुमार साहू, जिलासचिव शेषनारायण चन्द्रवंशी, वरिष्ठ सलाहकार तेजनायण शर्मा, संरक्षक यशवंत

आडिल, उपाध्यक्ष गण खिलावन साहू, नरेश ठाकुर, कामिनी चन्द्राकर, कोषाध्यक्ष धीरेन देवांगन, ब्लाक अध्यक्ष दुर्गा निमेष भोयर, ब्लाक अध्यक्ष धमधा नरेश कुमार साहू, दिलीप सिंह, गिरधर वर्मा, विनोद साहू, गुमानसिंह नायक, राजकुमार देशमुख, ईश्वरी वर्मा, रूपेश सिंह, बिहारी लाल साहू, धनु निषाद, आत्माराम वर्मा, नंदलाल साहू, ईश्वर निषाद, समीर निषाद सहित सचिवगण उपस्थित थे।

सुसाइड नोट में पैसों के लेनदेन और लड़की का जिक्र

- सेक्टर-5 में 12वीं के छात्र ने की आत्महत्या
- पुलिस हर पहलू से कर रही मामले की जांच
- माता-पिता का एकलौता पुत्र था नाबालिक



भिलाई। सेक्टर-5 से एक दर्दनाक घटना सामने आई है जहां 17 वर्षीय नाबालिग छात्र एस भागवंत ने घर के पास बने गोदाम में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली मृतक 12 वीं कक्षा का छात्र था और उसके पिता टेंट का काम करते हैं। गोदाम में टेंट का सारा सामान रखा हुआ था और वहीं उसने अपनी जान दे दी सुसाइड नोट में प्रेम प्रसंग और पैसों के लेन-देन का जिक्र है पुलिस हर पहलू की जांच कर रही है। सेक्टर 5 घर के सामने गणेश पंडाल बना हुआ है पड़ोसियों ने भागवंत को खेलेने के लिए बुलाया था लेकिन उसने मना

कर दिया। खाना खाने के बाद वह देर तक गोदाम में ही बैठा रहा और अपनी मां से कहा कि दरवाजा खुला छोड़ देना वह बाद में घर के अंदर सोने आ जाएगा सुबह जब उसकी मां पूजा-पाठ के लिए उठी और गोदाम में झांका तो बेटे को फांसी के फंदे में लटका देखकर उनके होश उड़ गए तुरंत पुलिस को सूचना दी गई इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लिया वहीं

सीएसपी सत्यप्रकाश तिवारी ने बताया कि मौके से एक सुसाइड नोट मिला है, जिसमें एक लड़की और पैसों के लेन-देन का जिक्र है पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है शुरुआती जांच में प्रेम प्रसंग को आत्महत्या की वजह माना जा रहा है लटका देखकर उनके होश उड़ गए तुरंत पुलिस को सूचना दी गई इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लिया वहीं

भाषण देने नहीं दिल से बात करने आया हूं, सांसद विजय बघेल

- 25 वीं शालेय राज्य भारोत्तोलन, फेसिंग प्रतियोगिता उद्घाटित
- जिला प्रशासन और शालेय शिक्षा विभाग दुर्ग का आयोजन
- कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा प्रदेश मंत्री जितेंद्र वर्मा ने की



पाटन। पाटन में 25 वीं शालेय राज्य स्तरीय भारोत्तोलन और फेसिंग प्रतियोगिता का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि दुर्गा लोकसभा सांसद विजय बघेल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा प्रदेश मंत्री जितेंद्र वर्मा ने की। विशिष्ट अतिथियों में नीलम राजेश चंद्राकर सभापति, जिला पंचायत, कल्पना साहू, कीर्ति नायक अध्यक्ष, जनपद पंचायत पाटन, योगेश निष्ठी भाले अध्यक्ष, नगर पंचायत पाटन शामिल थे। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ हुई। बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं और राजकीय गीत के माध्यम से खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। मंच संचालन

सनत साहू ने किया। सांसद विजय बघेल ने कहा कि मैं भी कभी आप सब की तरह दूरी पर बैठ

करता था। आज यहां भाषण देने नहीं, दिल से बात करने आया हूं। खिलाड़ी जीवन में भी

चुनौतियों को अवसर समझकर आगे बढ़ें। खेलों के लिए लगातार बजट बढ़ाया जा रहा है, और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में खिलाड़ियों को देश-विदेश तक पहुंचने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि पाटन में यह राज्य स्तरीय प्रतियोगिता उनके ही प्रयासों और निर्देश पर हो रही है जिससे क्षेत्र में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। जितेंद्र वर्मा ने कहा कि खिलाड़ी आज अभिनय, नेतृत्व और देश सेवा के हर क्षेत्र में अग्रणी हैं। कीर्ति नायक ने कहा कि पाटन के लोग गर्व महसूस करते हैं कि उनके बीच से एक खिलाड़ी सांसद बने हैं। तनवीर अकिल नोडल अधिकारी ने जिला प्रशासन की ओर से सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में सकीला देवदास जिला क्रीड़ा प्रभारी, हिमांशु साहू, हेमंत बघेल आवास प्रभारी, रानी केशव बछेर, कमलेश चंद्राकर, राजा पाठक, बाबा वर्मा, धर्मेन्द्र सिन्हा, ज्योति प्रकाश साहू समेत कई जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा।